घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com **अम्बिकापुर,वर्ष 23, अंक - 09- बुधवार 11- नवम्बर 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये** RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

संक्षिप्त समाचार

शीतकाल के लिए बंद हुए गंगोत्री धाम के कपाट



उत्तरकाशी,10 नवम्बर 2026। विश्व प्रसिद्ध गंगोत्री धाम के कपाट मंगलवार को अन्नकूट पर्व पर विधिवत पूजा अर्चना के साथ 12:05 बजे शीतकाल के लिए बंद कर दिए गए। इसके बाद मां गंगा की उत्सव डोली शीतकालीन पड़ाव मुखीमठ (मुखबा) के लिए रवाना हुई। डोली बुधवार सुबह मुखबा पहुंचेगी। जहां अब श्रद्धालु आगामी छह माह तक मुखीमठ (मुखबा) में ही मां गंगा के दर्शन कर सकेंगे। मंगलवार को गंगोत्री धाम के कपाट बंद होने की तैयारी सुबह 09 बजे से शुरू हुई। सर्व प्रथम उदय बेला पर मां गंगा के मुकुट को उतारा गया। इस बीच श्रद्धालुओं ने मां के भोग मूर्ति के दर्शन किए। इसके बाद अमृत बेला, स्वाती नक्षत्र प्रीतियोग शुभ लग्न पर ठीक 12:05 पर गंगोत्री धाम के कपाट श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ बंद किए गए। इस दौरान तीर्थ पुरोहितों ने विशेष पूजा व गंगा लहरी का पाठ किया। डोली में सवार होकर गंगा की भोगमूर्ति जैसे ही मंदिर परिसर से बाहर निकली तो पूरा माहौल भक्तिमय हो उठा। आर्मी की कुमांऊ रेजीमेंट बैंड की धुन और परंपरागत ढोल दमाऊ की थाप के साथ 12: 15 पर तीर्थ पुरोहित गंगा की डोली को लेकर शीतकालीन प्रवास मुखबा गांव के लिए पैदल रवाना हुए। रात्रि विश्राम के लिए गंगा की डोली मुखबा से चार किमी पहले चंदोमति के देवी के मंदिर में पहुंचेगी।

आंध्र के डिप्टी सीएम पवन कल्याण का तीसरी बार तलाक



नई दिल्ली,10 नवम्बर 2026। आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री और अभिनेता पवन कल्याण तथा उनकी पत्नी अन्ना कोनिडेला ने आपसी सहमति से तलाक लिया है। शादी के 13 साल बाद दोनों ने अलग होने का फैसला किया। उपमुख्यमंत्री कार्यालय के बयान के अनुसार, यह फैसला आपसी समझ और सम्मान के साथ लिया गया। दोनों ने कहा कि वे अच्छे दोस्त बने रहेंगे। पवन कल्याण और अन्ना अपने बच्चों के लिए समर्पित माता-पिता की भूमिका निभाते रहेंगे। बच्चों की खुशी और भलाई दोनों की साझा प्राथमिकता रहेगी। पवन कल्याण ने तीन शादियां की हैं और तीनों ही बार उनका तलाक हुआ है। फिल्मी डेब्यू के एक साल बाद ही पवन कल्याण की शादी उनके परिवार ने नंदिनी से करा दी थी। एक इंटरव्यू में पवन कल्याण ने कहा था, परिवार के कहने पर मैंने रिश्ते को अपना लिया था। कुछ समय हमारे बीच चीजें खराब होने लगी। हर रिश्ते में सब कुछ ठीक नहीं चलता, इसलिए ये अच्छा है कि एक दूसरे से अलग हो जाएं। नंदिनी से तलाक से लेने से पहले पवन अपनी को-स्टार रेनु देसाई के साथ लिव इन में रहने लगे थे। 2004 में रेनू ने बेटे अकिरा नंदन को जन्म दिया। बिना तलाक लिए दूसरी महिला के साथ रहने के कारण नंदिनी ने पवन के खिलाफ बाइगैमी कानून के तहत अदालत में केस दर्ज किया।

कांग्रेस अध्यक्ष का दावा-
दिल्ली के 36 वायु गुणवत्ता केंद्रों पर पीएम 2.5 के आंकड़े गायब,मांगा 'हवा का हिसाब'



नई दिल्ली,10 नवम्बर 2026। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने दिल्ली में वायु प्रदूषण के बढ़ते स्तर के बीच 59 वायु गुणवत्ता निगरानी केंद्रों में से 36 पर पीएम 2.5 के आंकड़े उपलब्ध नहीं होने का दावा किया। उन्होंने कहा कि सरकार देश को 'हवा का हिसाब' कब देगी। वायु प्रदूषण से निपटने के लिए ठोस कदम उठाने के बजाय सरकार प्रचार और आरोप-प्रत्यारोप में लगी है। खरगे ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि पिछले साल वायु गुणवत्ता निगरानी केंद्रों के आसपास पानी के टैंकरों से छिड़काव किया गया था। उस समय प्रदूषण के आंकड़ों को धोकर कम दिखाने के आरोप लगे थे। उन्होंने दावा किया कि इस साल प्रदूषण बढ़ने के दौरान दिल्ली के 59 निगरानी केंद्रों में से 36 पर पीएम 2.5 के आंकड़े ही गायब हो गए। प्रधानमंत्री ने 8 मई 2019 को वायु प्रदूषण को बड़ी चुनौती बताया था, लेकिन उनकी सरकार ने इस दिशा में कुछ नहीं किया।

5 राज्यों में चुनाव से पहले आयोग का फैसला...
रिटायर्ड अफसरों पर भी लागू होगी आचार संहिता

नई दिल्ली,10 नवम्बर 2026। चुनाव आयोग ने आचार संहिता को लेकर एक बड़ा फैसला लिया है। इसके तहत आचार संहिता सिर्फ मौजूदा सरकारी कर्मचारियों पर ही नहीं, बल्कि रिटायर होकर फिर से सरकार के लिए काम कर रहे अफसरों और लोगों पर भी लागू होगी। आयोग ने यह फैसला कुछ लोगों पर सरकारी पद के गलत इस्तेमाल की शिकायतों के बाद लिया। अब उन्हें राजनीतिक निष्पक्षता बनाए रखनी होगी और चुनाव प्रचार या कैंपेनिंग से दूर रहना होगा। चुनाव आयोग ने इस फैसले को लेकर गोवा,मणिपुर, पंजाब,उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के मुख्य सचिवों और मुख्य निर्वाचन अधिकारियों को 9 नवंबर को लेटर भेजा है। आयोग ने चुनाव वाले क्षेत्रों में अधिकारियों के साथ बैठकें और वीडियो कॉन्फ्रेंस करने पर भी रोक लगाई है।

शिकायतों के बाद आयोग का फैसला : एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि पहले भी ऐसी शिकायतें मिली थीं।



चुनाव अधिकारियों को बुलाने पर रोक

आयोग ने निर्देश दिया कि ऐसे लोग किसी विधानसभा क्षेत्र या जिले के चुनाव से जुड़े अधिकारी को आधिकारिक चर्चा या बैठक के लिए नहीं बुला सकते। यह रोक उन क्षेत्रों में लागू होगी,जहां चुनाव घोषित हो चुके हैं। वे इन अधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस या बैठक भी नहीं कर सकते। आयोग ने कहा कि निर्देशों के उल्लंघन में किया गया कोई भी काम या लापरवाही गंभीरता से ली जाएगी। राज्यों को इन निर्देशों का सख्ती से पालन सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है।

इनमें कहा गया था कि राज्य सरकारों से अलग-अलग भूमिकाओं में जुड़े रिटायर्ड अधिकारी चुनाव के दौरान सरकारी अधिकारियों की बैठकें बुलाते हैं। चुनाव आयोग ने कहा कि राज्य सरकारों से जुड़े, नियुक्त या दोबारा नियुक्त किए गए लोगों पर भी सरकारी कर्मचारियों जैसी पाबंदियां लागू होंगी। ये पाबंदियां आचार संहिता लागू रहने तक प्रभावी रहेंगी।

राजनीतिक गतिविधियों से दूरी जरूरी

दोबारा नियुक्त किए गए लोग अपने नाम, सरकारी पद या अधिकार का इस्तेमाल किसी राजनीतिक दल या व्यक्ति के पक्ष में नहीं कर सकते। आयोग ने यह भी दोहराया कि आचार संहिता उन संस्थाओं,समितियों, निगमों और आयोगों पर लागू होती है, जिन्हें सरकार पूरी तरह या आंशिक रूप से फंड देती है। मतलब सरकारी पैसों से चलने वाली कोई भी संस्था चुनाव के दौरान किसी पार्टी का प्रचार नहीं कर सकती।

भारत विरोधी अभियान पर विदेश मंत्रालय सख्त...कहा...झूठ फैलाने की कोशिश दुर्भाग्यपूर्ण, ढाका से कार्रवाई की मांग

नई दिल्ली,10 नवम्बर 2026। विदेश मंत्रालय ने यूक्रेन-रूस युद्ध, बांग्लादेश में चीन के व्लॉगर्स की गतिविधियों,खालिस्तानी आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू के मामले और अमेरिका के मध्यावधि चुनाव को लेकर भारत का रुख साफ किया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने मंगलवार को कहा कि भारत यूक्रेन और रूस के बीच शांति स्थापित करने के लिए लगातार दोनों देशों के संपर्क में है। वहीं, बांग्लादेश की झुग्गी-बस्तियों के वीडियो को दिल्ली का बताकर दिखाने की कोशिशों को उन्होंने दुर्भाग्यपूर्ण बताया। इसके अलावा उन्होंने क्वाड की आगामी बैठकों और भारत-अमेरिका संबंधों पर भी बात रखी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के



बीच हुई बातचीत को लेकर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि भारत का शुरू से यही मानना रहा है कि शांति केवल बातचीत और कूटनीति के रास्ते ही बहाल हो सकती है। हाल के महीनों में प्रधानमंत्री मोदी ने भी लगातार इस बात पर जोर दिया है कि युद्ध रुकना चाहिए और संघर्ष खत्म होना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत इस दिशा में रूस और यूक्रेन दोनों के संपर्क में है और दोनों देशों के साथ कुछ सुझाव साझा किए हैं। इनमें काला सागर में जहाजों की सुरक्षा सुनिश्चित करना,ऊर्जा निर्यात और खाद्य आपूर्ति को लेकर दोनों देशों की चिंताओं का समाधान करना और हमले से बचने के दूसरे विकल्पों पर विचार करना शामिल है। रणधीर जायसवाल ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के बीच हुई टेलीफोन पर बातचीत में दोनों नेताओं ने संघर्ष से जुड़े ताजा घटनाक्रमों पर अपने-अपने विचार रखे।

दिल्ली-एनसीआर के कई क्षेत्रों में खतरनाक स्तर पर पहुंचा एक्यूआई

नई दिल्ली,10 नवम्बर 2026। दिल्ली और एनसीआर में प्रदूषण का प्रकोप लगातार बढ़ता जा रहा है। यहां के कई इलाकों में मंगलवार को वायु गुणवत्ता सूचकांक अत्यंत गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया। सुबह से ही आसमान में छाई धुंध के कारण न सिर्फ दृश्यता घटी है,बल्कि आम लोगों को सांस लेने में भारी तकलीफ और आंखों में जलन का सामना करना पड़ रहा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार दिल्ली के कई प्रमुख इलाकों में वायु गुणवत्ता रेड जोन (गंभीर श्रेणी) में पहुंच गई है। इनमें आईआईटी दिल्ली का एक्यूआई 388 (दिल्ली का सबसे प्रदूषित क्षेत्र),चांदनी चौक का एक्यूआई 380,आया नगर का 361,बुराड़ी क्रॉसिंग का 349, सिरीफोर्ट और पंजाबी बाग का क्रमशः 343-343,आरके पुरम का 338, गुरुग्राम का 323,मुंडका का 318,बदरपुर का 307,शादीपुर का 306, वजीरपुर का 304, आईजीआई एयरपोर्ट (टर्मिनल-3) और जहांगीरपुरी का क्रमशः 303-303 शामिल है। इसके अलावा विवेक विहार का 299,सोनिया विहार का एक्यूआई 283 दर्ज किया गया है जो गंभीर श्रेणी में है। प्रदूषण की मार केवल दिल्ली तक सीमित नहीं है, बल्कि पड़ोसी शहरों में भी हवा अत्यधिक जहरीली है। इनमें बल्लभगढ़ का एक्यूआई 340, गुरुग्राम का 323,हिसार का 316, नोएडा का 301,गाजियाबाद का 244 और ग्रेटर नोएडा का एक्यूआई 233 शामिल है।

500-2000 के नोट बंद हों...सिर्फ 100-200 के नोट चलें डिजिटल पेमेंट से भ्रष्टाचार रुकेगा : सीएम चंद्रबाबू

नई दिल्ली,10 नवम्बर 2026। आंध्र प्रदेश के सीएम चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि 500 और 2,000 रुपए के नोट बंद कर देने चाहिए। सिर्फ 100 और 200 रुपए के नोट ही चलन में रहने चाहिए। बड़े नोटों का चलन कम करने और डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देने से भ्रष्टाचार पर रोक लगाने में मदद मिल सकती है। उन्होंने कहा कि पहले भी डिजिटल करेंसी को लेकर एक रिपोर्ट तैयार कर पीएम नरेंद्र मोदी को सौंपी थी। अब वे फिर इस मुद्दे को उठाएंगे। नायडू ने यह मांग 9 नवंबर को अमरावती में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान उठाई थी। यह बयान 8 नवंबर 2016 की नोटबंदी के 10 साल पूरे होने के अगले दिन आया था। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने 19 मई 2023 को 2000 के



नोट चलन से वापस लेने का फैसला किया था, लेकिन ये नोट अभी भी कानूनी रूप से वैध हैं। यानी इनसे लेन-देन किया जा सकता है। 8 नवंबर 2016 को 500 और 1,000 के पुराने नोट बंद किए गए थे।

स्थानीय चुनावों में एनडीए ने धनबल का असर कम किया

आंध्र प्रदेश में हाल ही में हुए स्थानीय निकाय चुनावों का जिक्र करते हुए नायडू ने कहा कि नतीजे नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस (एनडीए) के प्रति जनता के बढ़ते समर्थन को दिखाते हैं। उन्होंने दावा किया कि गठबंधन ने चुनावों में धनबल के प्रभाव को कम करने में कामयाबी हासिल की है। सीएम की ओर से साझा किए गए आंकड़ों के मुताबिक,शहरी स्थानीय निकाय और परिषद चुनावों में एनडीए को 58.9% वोट मिले। यह 2024 के लोकसभा चुनाव में मिले 55.3% वोटों से 3.6 प्रतिशत अंक ज्यादा है। वहीं, वाईएसआर कांग्रेस पार्टी का वोट शेयर 2024 के 39.81% से घटकर स्थानीय निकाय चुनावों में 33.56% रह गया। इसमें 6.25 प्रतिशत अंक की गिरावट आई है। नायडू के मुताबिक,दोनों दलों के बीच वोट शेयर का अंतर 25.34 प्रतिशत अंक रहा।

100 मेयर और चेयरपर्सन पदों में से एनडीए ने 94 पर जीत दर्ज की

नायडू के मुताबिक,शहरी स्थानीय निकायों में भी गठबंधन का प्रदर्शन मजबूत रहा। 100 मेयर और चेयरपर्सन पदों में से एनडीए ने 94 पर जीत दर्ज की। इनमें 13 में से 12 मेयर और 87 में से 82 चेयरपर्सन के पद शामिल हैं। इन पदों में अष्ठक्के 70,जन सेना पार्टी ने 20 और बीजेपी ने 4 पद जीते। गठबंधन ने 3,941 नगर निगम और नगरपालिका वार्डों में से 3,233 पर जीत दर्ज की। यह वार्डों का 82% है। एनडीए ने 100 में से 95 शहरी स्थानीय निकायों में बहुमत हासिल किया और 16 निकायों के सभी वार्डों में जीत दर्ज की।

साइबर अपराधों को लेकर पुलिस अधिकारियों को कार्यशैली में बदलाव लाना चाहिए : राष्ट्रपति

नई दिल्ली,10 नवम्बर 2026। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने साइबर अपराधों की बढ़ती गंभीरता और डीपफेक सामग्री से उत्पन्न खतरों के मद्देनजर पुलिस अधिकारियों को अपनी कार्यशैली और दृष्टिकोण में बदलाव लाने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि पुलिस को अत्याधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करने वाले अपराधियों से हमेशा एक कदम आगे रहना होगा। राष्ट्रपति ने मंगलवार को राष्ट्रपति भवन में भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के 78वें बैच (2025 बैच) के प्रशिक्षु अधिकारियों से मुलाकात के दौरान उन्हें संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि साइबर अपराधों का दायरा लगातार बढ़ रहा है और वे अधिक गंभीर होते जा रहे हैं। पुलिस को समाज में साइबर अपराधों की गंभीरता के प्रति व्यापक स्तर पर जागरूकता फैलानी चाहिए। राष्ट्रपति ने कहा कि लोगों में भय पैदा करने के लिए दुष्प्रचार फैलाना एक गंभीर समस्या बनकर उभर रहा है। विशेष रूप से युवा वर्ग सुनियोजित दुष्प्रचार से प्रभावित हो सकता है। इस तरह की गतिविधियां स्थानीय,



क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर भी हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि सतर्क और कुशल पुलिस व्यवस्था ऐसी परिस्थितियों को गंभीर रूप लेने से रोक सकती है। उन्होंने कहा कि आम नागरिकों के लिए पुलिस अधिकारी और सिपाही शासन-प्रशासन के प्रतीक होते हैं। जब पुलिस व्यवस्था अच्छी तरह काम करती है तो लोगों को शासन भी बेहतर महसूस होता है। पुलिस अधिकारी जब संवेदनशीलता और ध्यानपूर्वक लोगों की शिकायतें सुनते हैं तो इससे उनमें भरोसा और सुरक्षा की भावना पैदा होती है। राष्ट्रपति ने प्रशिक्षु अधिकारियों से कहा कि उन्हें समाज के कमजोर और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के लोगों की समस्याओं को प्राथमिकता देनी चाहिए।

कांग्रेस हैदराबाद में 13-14 नवंबर को करेगी भारत समिट,70 देशों के प्रतिनिधि लेंगे हिस्सा

नई दिल्ली,10 नवम्बर 2026। कांग्रेस 13 एवं 14 नवंबर को हैदराबाद में भारत समिट आयोजित करेगी। इसमें 70 देशों के करीब एक हजार प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे। इनमें नीति निर्माता और दुनिया के विभिन्न देशों के प्रगतिशील आंदोलनों से जुड़े प्रमुख नेता शामिल होंगे। समिट में नए वैश्विक व्यवस्था, भू-राजनीतिक बदलाव, जलवायु परिवर्तन,मीडिया की भूमिका और सूचना की विश्वसनीयता सहित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा होगी। पूर्व विदेश मंत्री, कांग्रेस के विदेश विभाग के अध्यक्ष सलमान खुर्शीद ने मंगलवार को यहां कांग्रेस मुख्यालय में पत्रकार वार्ता में कहा कि यह समिट दो महत्वपूर्ण अवसरों के साथ



आयोजित हो रही है। इनमें पंडित जवाहरलाल नेहरू की 137वीं जयंती और भारत की आजादी के 80 वर्ष पूरे होना शामिल है। उन्होंने कहा कि नेहरू की सोच आज भी कांग्रेस की विदेश नीति और उसके दृष्टिकोण के लिए प्रेरणा है। समिट का उद्देश्य राहुल गांधी की भारत और दुनिया के भविष्य तथा नई वैश्विक व्यवस्था की परिकल्पना पर विचार करना है। इसमें 12 अंतरराष्ट्रीय सत्र और तेलंगाना पर केंद्रित आठ सत्र होंगे। तेलंगाना के सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार, उद्योग एवं वाणिज्य तथा विधायी मामलों के मंत्री श्रीधर बाबू दुड्डिल्ला ने कहा कि विभिन्न देशों से आने वाले प्रतिनिधियों के विचार-विमर्श से तेलंगाना के शासन और जनता को लाभ मिलेगा। अंतरराष्ट्रीय सत्र हैदराबाद इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर (एचआईसीसी) में होंगे,जबकि तेलंगाना से जुड़े सत्र हाइटेक्स में आयोजित किए जाएंगे। इन सत्रों में फ्यूचर सिटी और शहरीकरण, आर्थिक एवं सामाजिक न्याय, कल्याणकारी नीतियों,सहकारी संघवाद, संस्कृति,युवा और खेल तथा चुनावी निष्पक्षता जैसे विषयों पर चर्चा होगी। श्रीधर बाबू ने कहा कि भारत समिट में शामिल होने वाले भागीदारों को दिसंबर में होने वाले इन्वेस्ट तेलंगाना ग्लोबल समिट 2026 में भी आमंत्रित किया जाएगा। यह आयोजन 7 से 9 दिसंबर तक होगा। इसमें संभावित निवेश के अवसरों पर चर्चा की जाएगी।

सोनिया गांधी की किताब 'बिलॉन्गिंग: अ जर्नी ऑफ लव' की बिक्री शुरू

544 पेज में 7 चैप्टर,राजीव से प्यार,इटली का पासपोर्ट छोड़ने और पीएम पद ठुकराने की कहानी

नई दिल्ली,10 नवम्बर 2026। सोनिया गांधी की किताब 'बिलॉन्गिंगः अ जर्नी ऑफ लव' की बिक्री शुरू हो गई है। बिना किसी लॉन्च इवेंट के यह सीधे मार्केट में मिलने लगी है। हार्पर कॉलिन्स इंडिया से प्रकाशित इस किताब में 544 पेज हैं और इसे 7 चैप्टर में बांटा गया है। पहले एडिशन के लिए एक लाख कॉपियां छापी गई हैं। किताब के कवर पर सोनिया का फोटो है, जिसे 1966 में राजीव गांधी ने क्लिक किया था। शुरुआती पेज पर लिखा है-मेरे बेटे राहुल,बेटी प्रियंका और पोते-पोतियों रेहान और मिराया के नाम। इसके बाद एक पेज पर ऋग्वेद की ऋचाएं ली गई हैं। सोनिया ने किताब को निजी मेमॉयर बताया है और कहा है कि यह राजनीतिक किताब नहीं है। इसमें गांधी परिवार के साथ हुई त्रासदियों और 2004 के राजनीतिक घटनाक्रम का जिक्र है। किताब के 7 चैप्टर में राजीव से मुलाकात, प्यार-शादी, भारत आना, राजीव के निधन के बाद कांग्रेस का नेतृत्व करने और पार्टी को बहुमत मिलने के बावजूद



कैम्ब्रिज में राजीव से पहली मुलाकात,पहली नजर में प्यार हुआ

सोनिया 19 साल की उम्र में इटली से अंग्रेजी सीखने कैम्ब्रिज पहुंची थीं। वहां एक ग्रीक रेस्टोरेंट में उनकी नजर राजीव गांधी पर पड़ी। जनवरी के एक दिन दोस्त क्रिश्चियन वॉन स्टिगलिट्ज ने दोनों की मुलाकात कराई। सोनिया के मुताबिक,पहली मुलाकात में ही दोनों को एक-दूसरे से प्यार हो गया। राजीव दिल्ली से कैम्ब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज में इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने आए थे। धीरे-धीरे दोनों की मुलाकातें बढ़ने लगीं। साथ घूमना,दोस्तों के साथ पार्टियों में जाना और छुट्टियां बिताना उनकी जिंदगी का हिस्सा बन गया। राजीव पहली बार सोनिया को वैलेंटाइन डे पर एक पार्टी में ले जाने पहुंचे थे। सोनिया के मुताबिक, उन्हें देखकर राजीव कुछ पल के लिए ठिठक गए थे। दोनों को लगने लगा था कि वे हमेशा साथ रहना चाहते हैं।

पिता के गुस्से के डर से परिवार को नहीं बताया

सोनिया राजीव से अपने रिश्ते के बारे में परिवार को बताने से डरती थीं। उनके पिता स्टेफानो मैनो काफी सख्त स्वभाव के थे। सोनिया को डर था कि पता चलने पर वे उन्हें तुरंत इटली वापस बुला लेंगे।

पिता ने रूस में गरीब परिवार की मदद की,बेटियों के नाम उनकी बच्चियों के नाम पर

सोनिया के पिता अनुशासन पसंद थे,लेकिन जरूरतमंदों की मदद के लिए भी हमेशा तैयार रहते थे। वे दूसरे विश्वयुद्ध में इटली की सेना से रूस के मोर्चे पर लड़े थे। वहां उन्होंने एक गरीब परिवार के बच्चों को खाना दिया था। उस परिवार की दो बच्चियों के नाम अनूश्का और सोनिया थे। उन्होंने अपनी बेटियों के नाम भी उन्हीं बच्चियों के नाम पर रखे। हालांकि,चर्च में उनके नाम एलेसांद्रा और एंटोनिया दर्ज हुए,लेकिन परिवार में वे अनूश्का और सोनिया के नाम से ही जानी गई।

प्रधानमंत्री न बनने के फैसले का जिक्र किया गया है। किताब में एक पेज पर ऋग्वेद की ऋचा (श्लोक) ली गई हैं। इसका अर्थ है...'साथ मिलकर चलो, साथ मिलकर बोलो और तुम्हारे विचार एक हों। तुम्हारा उद्देश्य एक हो और तुम्हारे दिलों में आपसी सामंजस्य हो। तुम्हारे विचार एकजुट हों,ताकि तुम सब मिलकर एकता और पूर्णता के साथ जीवन बिताओ।'

इटली की नागरिकता छोड़ते वक्त धड़कनें तेज थी : सोनिया ने किताब में बताया कि उन्होंने काफी समय तक अपना इटली का पासपोर्ट संभालकर रखा था,क्योंकि वह उनकी पहचान का हिस्सा था, जिसे वे इटली से भारत लेकर आई थीं। इस पासपोर्ट के जरिए उन्हें अपने माता-पिता से मिलने के लिए कई तरह के फॉर्म और स्पॉन्सरशिप लेटर की औपचारिकताएं नहीं करनी पड़ती थीं। हालांकि,समय के साथ इटली जाना कम हो गया और वहां की जीवनशैली से उनका जुड़ाव भी पहले जैसा नहीं रहा।

राजीव गांधी के सार्वजनिक जीवन में आने के बाद उन्हें भारतीय नागरिकता लेना सही लगा। वे भारतीय खान-पान, पहनावे और रहन-सहन को अपना चुकी थीं। उनका परिवार और दोस्त भी भारत में थे। नागरिकता छोड़ने की औपचारिक प्रक्रिया इटली के राजदूत के आवास पर हुई। वहां एक अधिकारी ने उन्हें दस्तावेज पढ़कर सुनाने और फैसला अंतिम होने की बात समझने को कहा। दस्तावेज पढ़ते समय उनकी धड़कन तेज हो गई और चेहरा गर्म हो गया। उन्हें ऐसा लगा जैसे उनकी पहचान का बचा हुआ एक हिस्सा भी हमेशा के लिए छूट रहा हो। रिकॉर्ड के मुताबिक, उन्होंने 1983 में भारतीय नागरिकता ली थी।

संपादकीय

लोकतंत्र बचाने के बहाने हुड़दंग

पिछले कुछ महीनों से आंदोलन के नाम पर हुड़दंग मचाने और झूठे आरोपों का रोना रोने वाले आइएनडीआइए ने इस माह के आरंभ में दिल्ली में लोकतंत्र की रक्षा के नाम पर रैली निकाली। मेरे मन में एक मूल सवाल उठता है कि जिस कांग्रेस ने 1975 में देश पर आपातकाल थोपकर लोकतंत्र का गला घोंट दिया था,उसी कांग्रेस को आज लोकतंत्र की रक्षा की इतनी चिंता आखिर क्यों सता रही है? दिल्ली की सड़कों पर आंदोलन के नाम पर अराजकता फैलाने वालों को क्या लोकतंत्र की बातें शोभा देती हैं? विरोधियों को रैलियां निकालने,आंदोलन करने और सरकार की आलोचना करने की पूरी आजादी है। मीडिया के सामने बोलते हुए फेक नैरेटिव फैलाने से भी विपक्ष को कोई नहीं रोकता। उनके नेताओं को कोई जबरन जेल में नहीं डाल रहा है। इसके बावजूद लोकतंत्र खतरे में होने का पाखंड किया जा रहा है। सर्वोच्च न्यायालय और निर्वाचन आयोग जैसी संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े करना और न्यायपालिका पर दबाव बनाने का प्रयास करना लोकतंत्र के मूलभूत मूल्यों को ही चुनौती देने जैसा है। लोकतंत्र में जनता का जनादेश सर्वोपरि होता है। उसे स्वीकार करने की बजाय देश में अस्थिरता पैदा करने की राजनीति की जा रही हो,तो उसका दृढ़ता से जवाब देना ही होगा।

पिछले सप्ताह की दो खबरें विशेष रूप से उल्लेखनीय रहीं। देशभर में हुए विधान परिषद चुनावों के नतीजे घोषित हुए। इनमें एनडीए को शानदार सफलता मिली। कांग्रेस और अन्य छोटे-मोटे विपक्षी दल पिछले कई महीनों से लगातार बैलेट पेपर से चुनाव कराने की मांग कर रहे हैं। विधान परिषद के चुनाव बैलेट पेपर से ही हुए,इसके बावजूद कांग्रेस को पूरे देश में केवल एक सीट पर जीत मिली और हमेशा की तरह उन्हें करारी हार का सामना करना पड़ा,यहां तक कि कर्नाटक जहां कांग्रेस की सत्ता है,वहां पढ़े लिखे मतदाताओं ने उनका सूपड़ा साफ कर दिया। दूसरी बेहद महत्वपूर्ण खबर देश में गरीबी की स्थिति से जुड़ी थी। विश्व बैंक ने पावर्टी एंड इक्विटी ब्रीफ नाम से अपनी रिपोर्ट जारी की। इसमें बताया गया है कि पिछले पंद्रह वर्षों में भारत में गरीबों की संख्या में भारी कमी आई है। रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2011 में भारत की कुल आबादी में गरीबों का अनुपात 27.1 प्रतिशत था, जो अब घटकर 2.6 प्रतिशत रह गया है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि गरीबी कम करने की भारत की रफ्तार दुनिया में सबसे तेज है।

प्रथम अन्नकूट का भोग गिरिराज गोवर्धन को लगाकर प्रारम्भ हुआ अन्नकूट उत्सव !

द्वापर युग के अंत में जब भगवान श्री कृष्ण धर्म की स्थापना और समाज-रक्षा के लिए ब्रज-भूमि में देवकी के गर्भ से जन्म ले गोकुल में नंदराय के यहाँ बाल लीला करने पधारे तो एक बार परंपरागत इंद्र-पूजन के प्रसंग पर भी उनकी दृष्टि 56 प्रकार के पकवानों पर गई तब वे महज सात वर्ष के थे। उन्होंने नन्दराय जी से पूछा,तात,यह स्वादिष्ट पकवानों का अम्बार क्यो तैयार हो रहा है? क्या कोई महान देव का पूजन-समारोह है? या अन्य कोई उत्सव मनाया जाना है। इस पर नन्दराय ने अपने भोले लाल को गोदी में बैठाकर पुचकारते हुए कहा कि लाल,हम ब्रजवासी अनेक वर्षों से अपनी सुरक्षा, गोधन की पूर्णता,सदृष्टि,धन-धान्य की वृद्धि के लिए देवाधिदेव इद्र की पूजा करते है और उनसे हमें सब प्रकार का आनंद मिलता है। नन्दनन्दन ने बाबा नन्द राय की बात को बड़ी शाति से सुना और अपनी कोमल-आकर्षक वाणी से इद्र के विरुद्ध वास्तविक विचार प्रकट करते हुए कहा तात,हम ब्रजवासी हैं, गायों को पालते है ओर गायों को चराने के लिए उत्तम चारा,पानी आदि समस्त सुविधाए हमे वन एवं पर्वत से सहज ही प्राप्त होते है इसलिए वन ओर पर्वत ही हमारे लिए सब कुछ है। हम सब बाल गोपाल और ब्रजवासी का सारा गोधन इस वन में निश्चित है ओर यहाँ हमारी गौएँ चरती है,हमें गौएं के लिए भरपूर मात्रा में चारा,झरनो का शीतल जल मिलता है,अत इस सामग्री से यदि इन्द्र की पूजा न कर पर्वतराज 'गिरिराज की पूजा करें तो श्रेयस्कर है,इससे हमें सर्वथा लाभ और सुख होगा।



आत्माराम यादव
नर्मदापुरम,मध्यप्रदेश

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

श्री कृष्ण की गिरिराज गोवर्धन के प्रति व्यक्त की गई मधुर सलाह ने नन्दराय ओर ब्रजवासियों के हृदय में गहरा असर किया और सभी ने इंद्र की पूजा भेंट न कर यह 56 प्रकार की अन्नकूट पूजन सामग्री गिरिराज को अर्पित कर उनकी पुजा का निश्चय कर लिया। वह समय सुख-समृद्धि का था। प्रत्येक में ममता,सह-भ्रातृत्व,प्रेम का साम्राज्य था,अन्न-धन की विपुलता थी। श्री कृष्ण सभी ब्रजवासियों के प्राण-धन थे अतएव दुगुने उत्साह से कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को विविध भाँति के 56 प्रकार के पकवानो को बैलगाड़ियों में भरकर अपनी गायो को विभिन्न रंग-रोगन से सजाकर उनके सींगो-खुरो को स्वर्ण-चांदी से जे कर,स्वय सुंदर वस्त्रों से सजधज कर सारे ब्रज-वासियों व ब्रज-रमणियो को साथ ले,गिरिराज की पूजा के लिये चल पडे। पर्वत समीप था सभी ने आनंद-मग्न हो गिरिराज को प्रणाम किया। अनंतर विविध भाँति से स्वच्छ कर गिरिवर के सम्पूर्ण परिसर भूमि को गोबर से लीप विभिन्न प्रकार के मौसमी फलों एवं 56 प्रकार के पकवानों सहित परिक्रमा कर पूजा करने लगे। प्रथम स्वच्छ जल, पश्चात् इत्र, हल्दी, रोली (कुमकुम) और स्वच्छ जल से स्नान



करा वस्त्र,चन्दन आदि से भूषित कर सुगंधित पुष्प-माला समर्पित की। धूप-दीप के बाद भोग समर्पण किया । पकवानो का समूह इतना था कि एक प्रकार से अन्न का कूट (कोट-पर्वत) बन गया और उसमें गिरिराज भी छुप गये। श्री कृष्ण ने एक स्वरूप से ब्रजवासियो के साथ गिरि का पूजन किया और अपने दूसरे रूप से अनेको भुजायो के द्वारा गिरिराज से सभूत हो ब्रजवासियो के पकवानो का भोग लगाया। इस प्रकार भगवान् का गिरिराज से प्रकट होकर भोग-लगाना देख ब्रजवासियो को बड़ी प्रसनत्ता हुई। भोग के बाद शेष बचे बचे प्रसाद को अपने परिवार, ब्राह्मणो से लेकर सभी जातियों में बाँट दिया और सानंद अपने घरो को चल पडे। इधर जब समय बीत गया और इन्द्र की पूजा न हुई तो इन्द्र के हृदय में विचार उठा और उसने प्रकारांतर से किये हुए ब्रजवासियो के सारे कृत्य को समझ लिया और अभिमान में भरकर अपने विनाशकरी मेघो को बुला आदेश दिया कि आज एक साधारण से गोपकुमार कृष्ण के कहने से मेरी पूजा भेंट ब्रजवासियों ने गिरिराज गोवर्धन पर्वत को समर्पित कर गोवर्धन की पूजा की है,अत इनके बढे मद को चूर कर देना है और ब्रज-मडल को डुबाकर ही शांति लेनी है। आज्ञानुसार ब्रज मण्डल पर मूसलाधार वर्षा होने लगी। इन्द्र का कोप देख सभी ब्रजवासी बुरी तरह भयभीत हो गए ओर इधर-उधर दौडने लगे और अपने सहायक नेता श्रीकृष्ण को पुकार कर सारी पीड़ा कह सुनाई। मुदुल हास्य करते हुए श्रीकृष्ण ने घबराहट भरी ब्रजवासियों की दशा का अवलोकन कर उनके भय को दूर करते हुए कहा तुम सभी भय-रहित हो परिवार गोधन के सहित गिरिराज के समीप चलो,वही तुम्हारी रक्षा करेगा। गोप-गोपियों ने अपने परम प्रिय श्री कृष्ण की बात मानी और सब के सब शीघ्र वहाँ पहुँच गये, तब अतुल बलशाली श्री कृष्ण ने सभी के देखते-देखते गिरिराज-पर्वत को सहसा उठा लिया और सात दिन तक उसे धारण कर अपने ब्रजवासियों की उसके नीचे रक्षा कर चकित कर दिया। इद्र अपनी सारी शक्ति लगाकर थक गया और ब्रज का कुछ भी न विगाड सका, तव इन्द्र सुरभि गाय को साथ ले ब्रज भूमि में श्रीकृष्ण के मर्म को समझकर उनकी शरण में आया और श्री कृष्ण की अनुपम रूप-माधुरी को देख लोटपोट हो गया तथा श्रीकृष्ण की शरणगति पाकर उनकी स्तुति कर उनका गोविंद नाम रख विनीत हो क्षमा माँगी। इस कृत्य से ब्रजवासी बड़े ही प्रमुदित हुए और गिरिराज की महत्ता कहने लगे।

गिरिराज की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न पुराणों में वर्णन मिलता है कि गोलोक धाम-स्थित श्री कृष्ण के मन में एक समय रास-विहार की इच्छा उत्पन्न हुई,परंतु बिहार के लिए स्थान चाहिए, तव श्रीकृष्ण ने सजल-प्रेम-पूरित तेज को प्रकट किया,यही गिरिराज है। जब पूर्णावतार श्री कृष्ण गोलोक से लोक-रक्षार्य ब्रज-भूमि में पधारे तब वे वृदावन आए, धुति-रूपा गोपियो ने जन्म-ग्रहण किया तो बही गिरिराज शालमणि द्वीप के बीच द्रोणाचल पर्वत से उत्पन्न हुआ और ब्रजभूमि में लाया गया। गिरिराज को प्रतिदिन घटने का शाप भी मिला है। कृष्णावतार के समय गिरिराज गोवर्धन की महानता सभी देवों- देवताओं के हृदय में व्याप्त रही जिससे वे गोपाल कृष्ण के रूप में उनकी स्तुति ओर आराधना करते रहे तभी से गोवर्धन का महात्म्य नित्यप्रतिदिन युग बदलने के बाद भी बे ता रहा है ओर कलिकाल में आज सभी गिरिराज गोवर्धन को श्रीकृष्ण के भगवद्-विग्रह रूप में पूजते आ रहे है। गोपाल कृष्ण के द्वारा ब्रजवासियों का अन्नकूट भेंट स्वीकारने के बाद कृष्णरूप में गिरिराज गोवर्धन आज भी पूजित है। सदियो से चली आ रही यह 56 प्रकार के भोग ओर विभिन्न प्रकार के फल-फूल आदि की पुजा अर्चना गिरिराज गोवर्धनधारी श्रीकृष्ण को अर्पित की जाती है ओर सारा जगत उन्हे भेंट की गई इस सामग्री से अन्नकूट महोत्सव मनाकर ब्रजमण्डल की इस उदार परंपरा से जगत को सम्मोहित किए हुये है।

स्नेह,त्याग और विश्वास की उजली परंपरा है भाई दूज

पंचदिवसीय दीपोत्सव धनतेरस से शुरू होता है और इसका समापन भाई दूज के साथ ही होता है। भाई दूज पर बहनें अपने भाई के माथे पर सौभाग्य का तिलक करती हैं और उनके लिए सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। हर साल यह पर्व कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि को और आमतौर पर दीवाली से ठीक दो दिन बाद ही मनाया जाता है लेकिन इस वर्ष भाई दूज की तारीख को लेकर काफी भ्रम की स्थिति बरकरार रही है। कोई 10 नवंबर तो कोई 11 नवंबर को भाई दूज बता रहा है। हिंदू पंचांग के अनुसार, इस साल द्वितीया तिथि 10 नवंबर को दोपहर 2 बजे शुरू हुई है और इसका समापन 11 नवंबर को दोपहर 3 बजकर 53 मिनट पर होगा। पंचांग के अनुसार, 10 नवंबर को उदया तिथि नहीं मिल रही है, इसलिए भाई दूज का पर्व 11 नवंबर को ही मनाया जाएगा। भाई दूज पर्व को 'यम द्वितीया' व 'भ्रातृ द्वितीया' के नाम से भी जाना जाता है। बहुत से भाई इस दिन सौभाग्य तथा आयुष की प्राप्ति के लिए इस दिन यमुना अथवा अन्य पवित्र नदियों में साथ-साथ स्नान भी करते हैं। भैया दूज मनाने के संबंध में कई किवंदतियां प्रचलित हैं। एक कथा यमराज और उनकी बहन यमुना देवी से संबंधित है। भगवान सूर्यदेव की पत्नी छाया की कोख से यमराज और यमुना का जन्म हुआ था। यमुना अपने भाई यमराज से बहुत स्नेह करती थी और अक्सर उनसे अनुरोध करती रहती थी कि वे अपने इष्ट मित्रों सहित उसके घर भोजन के लिए पधारें लेकिन यमराज हर बार उसके निमंत्रण को किसी न किसी बहाने से टाल जाते। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को यमुना ने यमराज को एक बार फिर भोजन के लिए आमंत्रित किया। उस समय यमराज ने विचार किया कि मैं तो अपने कर्तव्य से बंधा सदैव प्राणियों के प्राण ही हरता हूं,इसलिए इस चराचर जगत में कोई भी मुझे अपने घर नहीं बुलाना चाहता लेकिन बहन यमुना तो मुझे बार-बार अपने घर आमंत्रित कर रही है,इसलिए अब तो उसका निमंत्रण स्वीकार करना ही चाहिए।



योगेश कुमार गोयल
पटपड़गंज,नईदिल्ली

यमराज को अपने घर आया देख यमुना की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने भाई का खूब आदर-सत्कार करते हुए उनके समक्ष नाना प्रकार के व्यंजन परोसे। बहन के आतिथ्य से यमराज बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे कोई वर मांगने को कहा। इस पर यमुना ने उनसे अनुरोध किया कि आप प्रतिवर्ष इसी दिन मेरे घर आकर भोजन करें और मेरी तरह जो भी बहन इस दिन अपने भाई का आदर-सत्कार करे, उसे तुम्हारा भय न रहे। यमराज ने बहन यमुना को उसका इच्छित वरदान दे दिया। ऐसी मान्यता है कि उसी दिन से 'भाई दूज' का पर्व मनाया जाने लगा।

भाई दूज के संबंध में और भी कई कथाएं प्रचलित हैं। ऐसी ही एक अन्य कथा के अनुसार, एक ब्राह्मण की दो ही संतानें थी-एक पुत्र एवं एक पुत्री। पुत्री बहुत समझदार एवं गुणवती थी। वह अपने भाई से जी जान से प्यार करती थी। एक दिन उसका भाई उससे मिलने उसकी ससुराल पहुंचा। उस समय वह सूत कातने में व्यस्त थी। अतः उसे भाई के आने का पता ही न चल सका। भाई भी बिना कुछ बोले चुपचाप एक ओर बैठा रहा। जब थोड़ी देर बाद बहन की नजर उस पर पड़ी तो भाई को अपने घर आया देख उसे बेहद खुशी हुई। उसने भाई का भरपूर आदर-सत्कार किया। अगले दिन भाई को वापस लौटना था,अतः रास्ते के लिए वह आटे के पकवान



बनाने के उद्देश्य से चक्की में आटा पीसने लगी। अनजाने में चक्की में बैठा सांप भी आटे के साथ पिस गया। उसी आटे के पकवान एक पोटली में बांधकर उसने भाई को विदा किया और उसके घर से जाने के बाद जब उसे यह मालूम हुआ कि आटे में सांप पिस गया है तो अपने पुत्र को पालने में ही सोता छोड़कर वह अपने भाई के प्राणों की रक्षा के लिए दौड़ी। कुछ दूर जाने पर उसे एक पेड़ की छांव में अपना भाई सोता दिखाई दिया। उसने अभी तक पोटली में से कुछ भी नहीं खाया था। उसने भगवान का शुक्रिया अदा किया और पोटली उठाकर दूर फेंक दी तथा भाई के साथ मायके की ओर चल दी। रास्ते में उसने देखा कि भारी-भारी शिलाएं आकाश में उड़ रही हैं। उसने एक राहगीर से इस रहस्य के बारे में जानना चाहा तो उसने बताया कि जो बहन अपने भाई पर कभी नाराज न होती हो और उसे दिलो-जान से चाहती हो, उस भाई की शादी के समय ये शिलाएं उसकी छाती पर रखी जाएंगी। थोड़ी दूर चलने पर उसे नाग-नागिन दिखाई दिए। नाग ने बताया कि ये शिलाएं जिस व्यक्ति की छाती पर रखी जाएंगी,हम उसे डस लेंगे। जब बहन ने इस विपत्ति से बचने का उपाय पूछा तो नाग-नागिन ने बताया कि अगर भाई के विवाह के समय उसके सभी कार्य बहन स्वयं करे, तभी भाई की जान बच सकती है। जब उसके भाई के विवाह के लग्न का शुभ मुहूर्त आया तो वह भाई को पीछे धकेलती हुई स्वयं ही लग्न चढ़वाने के लिए आगे हो गई और घोड़ी पर भी स्वयं चढ़ गई। परिवारजन और संबंधी उसके इस विचित्र व्यवहार से हैरान तथा क्रोधित थे। उसके घोड़ी पर चढ़ते ही शिलाएं उड़ती-उड़ती आई लेकिन घोड़ी पर किसी पुरूष की जगह एक महिला को बैठी देख वापस मुड़ गई। जब सुहागरात का समय आया तो वह भाई को पीछे कर खुद भाभी के साथ सोने उसके कमरे में चली गई। परिवार के सभी सदस्य तथा सभी रिश्तेदार उसके इस अजीबोगरीब व्यवहार से बेहद आश्चर्यचकित और खफा थे। उन्हें उस पर गुस्सा तो बहुत आ रहा था लेकिन उसके जिद के समक्ष सभी विवश थे। सुहागरात पर नियत समय पर नाग-नागिन उसके भाई को डसने कमरे में पहुंच गए लेकिन उसने नाग-नागिन को मारने की सारी तैयारी पहले ही कर रखी थी। आखिरकार उसने नाग-नागिन का काम तमाम कर ही दिया और उसके बाद वह निश्चिंत होकर सो गई। सुबह होने पर सभी मेहमानों को विदा करने के बाद परिवार वालों ने सोचा कि अब इस बला को भी कुछ बचा-खुचा देकर यहां से चलता कर दिया जाए लेकिन नींद से जागने पर जब उसने पूरी घटना के बारे में सब को विस्तार से बताया कि किस प्रकार वह अपने बच्चे को पालने में ही सोता छोड़कर दौड़ी-दौड़ी भाई के प्राण बचाने के लिए उसके पीछे चली आई और सभी को नाग-नागिन के मृत शरीर दिखाए तो सभी की आंखों में आंसू आ गए और भाई के प्रति उसका असीम प्यार तथा समर्पण भाव देखकर उसके प्रति सभी का हृदय श्रद्धा से भर गया।

प्रतिबंध नहीं,सुरक्षित डिजिटल संसार की जरूरत

डिजिटल युग में बच्चों को इंटरनेट से दूर रखना उनके शिक्षा,अभिव्यक्ति और सूचना के अधिकारों को सीमित करना है...आवश्यकता व्यापक प्रतिबंधों की नहीं,बल्कि जिम्मेदार उपयोग,प्रभावी निगरानी और सुरक्षित डिजिटल वातावरण की है...

इक्कीसवीं सदी में इंटरनेट केवल मनोरंजन या संवाद का माध्यम नहीं रह गया है,बल्कि शिक्षा,सूचना, अभिव्यक्ति और सामाजिक सहभागिता का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। विशेषकर बच्चों के लिए डिजिटल दुनिया ज्ञान के नए द्वार खोलती है। ऐसे समय में बच्चों को इंटरनेट से पूरी तरह वंचित करना उनके विकास के अवसरों को सीमित करने जैसा है। सर्वोच्च न्यायालय ने बच्चों की इंटरनेट तक पहुँच के अधिकार से जुड़े अपने दृष्टिकोण में स्पष्ट किया है कि सुरक्षा के नाम पर व्यापक और एकमुश्त प्रतिबंध उचित समाधान नहीं हो सकते। संविधान के अनुच्छेद 19(1) के तहत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अनुच्छेद 21 के तहत जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार की व्यापक व्याख्या में डिजिटल पहुँच का महत्व भी सामने आता है। हालांकि, इस अधिकार का अर्थ यह नहीं है कि बच्चों को बिना किसी सुरक्षा व्यवस्था के इंटरनेट की खुली छूट दे दी जाए।



डॉ. प्रियंका सौरभ
हिसार,हरियाणा

बच्चों के शैक्षणिक विकास में इंटरनेट की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज डिजिटल पुस्तकालय,ऑनलाइन कक्षाएँ,शैक्षणिक वीडियो, आभासी प्रयोग शालाएँ और विभिन्न शिक्षण मंच पारंपरिक शिक्षा के पूरक बन चुके हैं। केंद्र सरकार के दीक्षा मंच और पीएम ई-विद्या जैसी पहल ने डिजिटल शिक्षा को व्यापक बनाने में योगदान दिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों के लिए इंटरनेट गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री तक पहुँच का माध्यम बन सकता है। जिन विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक,पुस्तकालय या अन्य संसाधन उपलब्ध नहीं हैं,वहाँ डिजिटल माध्यम शिक्षा की कमियों को काफी हद तक पूरा कर सकते हैं। इंटरनेट बच्चों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखता,बल्कि उनकी रचनात्मकता और स्वतंत्र चिंतन को भी प्रोत्साहित करता है। वे विज्ञान, साहित्य, इतिहास,पर्यावरण,कला और तकनीक जैसे विषयों पर अपनी रुचि के अनुसार जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अपनी कविताएँ,कहानियाँ, चित्र और विचार साझा कर सकते हैं। इससे उनमें अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास और संवाद की क्षमता विकसित होती है। सूचना का अधिकार भी इंटरनेट के माध्यम से अधिक प्रभावी बनता है। बच्चे अपने आसपास की सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याओं को समझकर जागरूक नागरिक बनने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। डिजिटल पहुँच समावेशी शिक्षा के लिए भी आवश्यक है। दिव्यांग बच्चों के लिए स्क्रीन रीडर, ऑडियो पुस्तकें,सांकेतिक भाषा आधारित सामग्री और अन्य सहायक तकनीकें शिक्षा को अधिक सुलभ बनाती हैं। दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों को भी देश-दुनिया के शैक्षणिक संसाधनों से जुड़ने का अवसर मिलता है। इंटरनेट डिजिटल साक्षरता विकसित करता है, जो भविष्य के रोजगार और उद्यमिता के लिए आवश्यक कौशल बन चुकी है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता,ऑनलाइन शोध,डिजिटल संचार और तकनीकी नवाचार के दौर में बच्चों को डिजिटल दुनिया से दूर रखना उनके भविष्य की संभावनाओं को कमजोर कर सकता है।

हालाँकि, इंटरनेट के लाभों के साथ गंभीर चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा आज अभिभावकों, शिक्षकों, सरकार और डिजिटल मंचों के सामने बड़ी जिम्मेदारी है। ऑनलाइन यौन



शोषण,बच्चों को बहला-फुसलाकर अनुचित गति विधियों में शामिल करना,साइबर बुलिंग,अश्लील सामग्री, फर्जी पहचान और डिजिटल धोखाधड़ी जैसी घटनाएँ बच्चों की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा हैं। कई बार बच्चे अनजान व्यक्तियों से संपर्क में आ जाते हैं और अपनी निजी जानकारी, तस्वीरें या स्थान संबंधी विवरण साझा कर देते हैं। इसका दुरुपयोग उनके मानसिक और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। साइबर बुलिंग भी एक गंभीर समस्या है। सोशल मीडिया पर अपमानजनक टिप्पणियाँ, धमकियाँ,मजाक उड़ाना और निजी तस्वीरों का दुरुपयोग बच्चों के आत्मविश्वास तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल मंचों द्वारा बच्चों के व्यवहार, पसंद और व्यक्तिगत जानकारी का अत्यधिक संग्रह उनकी निजता के अधिकार के लिए चुनौती है। एल्गोरिदम आधारित सामग्री बच्चों को लगातार स्क्रीन पर बनाए रखने का प्रयास करती है, जिससे उनकी पढ़ाई, नींद, शारीरिक गतिविधियों और सामाजिक संबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए समाधान इंटरनेट पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने में नहीं, बल्कि सुरक्षित और जिम्मेदार डिजिटल वातावरण तैयार करने में निहित है। सर्वोच्च न्यायालय के अधिकार-आधारित दृष्टिकोण का मूल संदेश भी यही है कि बच्चों की सुरक्षा के लिए अपनाए जाने वाले उपाय तर्कसंगत, आनुपातिक और उद्देश्य के अनुरूप होने चाहिए। किसी विशेष खतरे के समाधान के नाम पर सभी बच्चों की इंटरनेट पहुँच समाप्त कर देना उचित नहीं है। प्रतिबंधों के बजाय जोखिम के अनुसार सुरक्षा उपाय अपनाने चाहिए।

सबसे पहले,डिजिटल मंचों को बच्चों के अनुकूल बनाया जाना आवश्यक है। बच्चों के खातों में निजता संबंधी व्यवस्थाएँ पहले से सुरक्षित होनी चाहिए। अनजान व्यक्तियों के संदेशों, अनुचित संपर्कों और संवेदनशील सामग्री तक पहुँच को सीमित करने की व्यवस्था होनी चाहिए। बच्चों के व्यक्तिगत आँकड़ों का अनावश्यक संग्रह और व्यावसायिक उपयोग रोका जाना चाहिए। आयु के अनुरूप सामग्री उपलब्ध कराने और हानिकारक सामग्री की पहचान करने के लिए प्रभावी तकनीकी व्यवस्थाएँ विकसित करनी चाहिए।

दूसरा,अभिभावकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। बच्चों पर केवल निगरानी रखने के बजाय उनके साथ विश्वास और संवाद का संबंध विकसित करना होगा। उन्हें समझाना होगा कि इंटरनेट पर प्रत्येक व्यक्ति विश्वसनीय नहीं होता और निजी जानकारी साझा करना जोखिमपूर्ण हो सकता है। अभिभावकीय सहमति, आयु के अनुरूप नियंत्रण और समय-समय पर संवाद के माध्यम से बच्चों को जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार सिखाया जा सकता है। बच्चों की निजता और स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए मार्गदर्शन देना आवश्यक है। तीसरा,डिजिटल सुरक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषदों के माध्यम से साइबर सुरक्षा, डिजिटल शिष्टाचार,ऑनलाइन धोखाधड़ी,निजता और सूचना की सत्यता से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं। बच्चों को यह भी सिखाना होगा कि इंटरनेट पर उपलब्ध प्रत्येक जानकारी सही नहीं होती। किसी भी संदिग्ध गतिविधि या अनुचित संपर्क की स्थिति में उन्हें बिना भय के अभिभावकों और शिक्षकों को बताने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। चौथा,डिजिटल मंचों की जवाबदेही सुनिश्चित करना अनिवार्य है। बच्चों के यौन शोषण से संबंधित सामग्री की पहचान, उसे हटाने और संबंधित एजेंसियों तक सूचना पहुँचाने के लिए प्रभावी तंत्र होना चाहिए। साइबर अपराधों की शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया सरल और बच्चों के अनुकूल बनाई जानी चाहिए।

सत्ता पक्ष की ख़ामोशी और विपक्ष की विवशता के बीच

रामलीला मैदान की गूंज



दिल्ली का ऐतिहासिक रामलीला मैदान महज़ ईंट-पत्थरों और रेती का एक टुकड़ा नहीं है,बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र का वह जीवंत थर्मामीटर है,जो जब भी तपता है,देश के राजनीतिक तापमान का सही अंदाज़ दे देता है। आपातकाल के काले दिनों से लेकर जनलोकपाल और किसान आंदोलनों तक, इस मैदान ने देश के हर बड़े जन-विप्लव की पटकथा को अपनी छाती पर लिखा है। एक बार फिर यह मैदान सुलगती राजनीति,बहती हवाओं और बदलते तेवरों का गवाह बना है। लेकिन सवाल यह है कि इस जनसैलाब से हासिल क्या हुआ? क्या विपक्ष इस ऊर्जा को सही मुक़ाम तक पहुंचा पाया? क्या सत्ता पक्ष की रणनीतिक चुप्पी और उदासीनता लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत है? इन तमाम सवालों के बीच ये आलेख नेपथ्य में जाते मुद्दे और जगी हुई उम्मीदें÷ आज के समय का सबसे सटीक और आईना दिखाने वाला दस्तावेज बन जाता है।

जब भी रामलीला मैदान में हताश और निराश जनता का हुजूम उमड़ता है, सत्ता के गलियारों में शुरुआती हलचल और बेचैनी दिखना स्वाभाविक है। लेकिन अफ़सोस इस बात का है कि इस बेचैनी का अनुवाद ठोस संवाद या नीतिगत बदलाव में नहीं होता। सरकारें अक्सर ऐसे आंदोलनों को मौसमी तूफ़ान मानकर उनके गुज़र जाने का इंतज़ार करती हैं।बेरोज़गारी, आर्थिक असमानता, मंहगाई और अधिकारों की रक्षा जैसी बुनियादी समस्याओं पर सीधी और पारदर्शी प्रतिक्रिया देने के बजाय, उन पर राजनीतिक पर्दा डालने की कोशिश की जाती है। जब सत्ता पक्ष जनता की जायज़ मांगों पर ख़ामोश रहता है या उन्हें केवल राजनीतिक दलों का प्रायोजित षड्यंत्र करार देता है,तो यह लोकतंत्र की मूल आत्मा यानी संवाद पर सीधा प्रहार होता है।

इस बार के आंदोलन का सबसे अनूठा और क्रांतिकारी पहलू रहा है,जेन जी की मुखर भागीदारी। जिस पीढ़ी को अब तक रील्स, मीम्स और वर्चुअल दुनिया तक सीमित मान लिया गया था, उसने जब सड़कों पर उतरकर तख्तियां थामीं, तो उसने स्थापित राजनीतिक पंडितों को भी चौंका दिया। यह पीढ़ी तकनीक और ज़मीन का बेहतरीन तालमेल बिठाना जानती है। वे सोशल मीडिया के ज़रिए सेकंडों में किसी मुद्दे को राष्ट्रीय ट्रेंड बना देते हैं और भौतिक रूप से मैदान में डटकर सिस्टम को झकझोर भी देते हैं।

हालांकि,यह आशंका भी उतनी ही वास्तविक है कि यदि इस तात्कालिक और तेज़ ऊर्जा को कोई ठोस वैचारिक नेतृत्व और स्पष्ट एजेंडा नहीं मिला, तो यह निराशा के ठंडे बस्ते में जा सकती है। पर यह भी सच है कि डिजिट्ल युग की यह पीढ़ी पारंपरिक आंदोलनों की तरह आसानी से थकती नहीं है,यह मुद्दों को वर्चुअल स्पेस में तब तक ज़िंदा रखती है, जब तक व्यवस्था पसीज न जाए। रैली में उमड़ी भीड़ के बाद सबसे बड़ा सवाल यह उठता है कि क्या विपक्ष को कुछ हासिल हुआ?

और क्या आम आदमी के हाथ महज़ मायूसी लगी है? रैलियों के समाप्त होने के बाद जब मंच खाली होते हैं, कुर्सियां अपनी ख़ामोश दुनिया में लौटती हैं और नेता अपने वातानुकूलित दफ्तरों में चले जाते हैं, तब आम आदमी की ज़िंदगी फ़िर से उसी संघर्ष और महंगाई की चक्की में पिसने लगती है। विपक्ष की सबसे बड़ी कमज़ोरी यह रही है कि वह भीड़ को वोट या नीतिगत दबाव में तब्दील करने की दीर्घकालिक रणनीति बनाने में अक्सर चूक जाता है। जब रैलियों के बाद कोई ठोस परिणाम नहीं दिखता, तो जनता के भीतर यह भावना घर करने लगती है कि क्या ,थक-हारकर बैठ जाना ही उनका मुक़द्दर बन गया है? क्या लोकतंत्र में हाथ मलना ही हमारा आखिरी विकल्प रह गया है?

इतिहास गवाह है कि रामलीला मैदान का हर आंदोलन कभी न कभी शांत ज़रूर हुआ है, और उसके बाद के दिनों में अख़बारों की सुर्खियां भी ठंडी पड़ जाती हैं। मुद्दे पीछे छूट जाते हैं और राजनीति अपने पुराने चक्र पर लौट आती है। लेकिन इसका यह अर्थ कतई नहीं है कि सब कुछ व्यर्थ हो गया। रामलीला मैदान की रेती पर छूटे निशान भले ही कल धूल में मिल जाएं, वे हवा में एक अदृश्य वैचारिक बीज बो जाते हैं। जनता के भीतर सुलग रही यह चिंगारी पूरी तरह बुझती नहीं है। यह इस बात का निरंतर अहसास कराती रहती है कि लोकतंत्र में जनता की आवाज़ को कागजों के नेपथ्य में या फ़ाइलों के बस्ते में बहुत दिनों तक दबाकर नहीं रखा जा सकता।

सटीक दृष्टिकोण से देखा जाए तो, रामलीला मैदान की ये रैलियां और प्रदर्शन सिर्फ़ विरोध का ज़रिया नहीं हैं, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र के स्वास्थ्य की जांच करने का पैमाना हैं। सत्ता पक्ष की ख़ामोशी और विपक्ष की विवशता के बीच, असली ताक़त उस आम नागरिक और युवा पीढ़ी की है जो हर बार नए सिरे से उम्मीद जगाती है। थककर बैठ जाना लोकतंत्र का डीएनए नहीं है। कुर्सियां और सत्ता भले ही कुछ समय के लिए चुप्पी साध ले।लेकिन जन-आकांक्षाओं का यह ज्वार व्यवस्था को आईना दिखाता रहेगा। बदलाव रातों-रात नहीं आते, लेकिन जब तक जनता सवाल पूछना बंद नहीं करती, तब तक लोकतंत्र की उम्म

भाजपा पार्षद आलोक दुबे की शिकायत से खुला 3.46 हेक्टेयर शासकीय जमीन का खेल,आजाद इराकी भी हुआ गिरफ्तार...

- 1954-55 के अधिकार अभिलेख में कूटरचना कर सरकारी जमीन को निजी बताने का आरोप...पहले तुलेश्वर गुप्ता की गिरफ्तारी,अब दूसरे आरोपी पर पुलिस का शिकंजा
- कलेक्टर की जांच में सामने आई गंभीर गड़बड़ी,पांच लोगों पर एफआईआर के निर्देश के बाद कार्रवाई तेज...राजस्व अमले की भूमिका अब भी जांच का अहम सवाल...

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,10 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।
सरकारी जमीन को कागजों में निजी बताकर हथियाने और फिर उसकी रजिस्ट्री कराने के कथित खेल में सरगुजा पुलिस की कार्रवाई लगातार आगे बढ़ रही है। मैनपाट तहसील के ग्राम केसरा स्थित 3.46 हेक्टेयर शासकीय भूमि के राजस्व अभिलेखों में कूटरचना कर निजी व्यक्ति के नाम दर्ज कराने के मामले में थाना कमलेश्वरपुर एवं साइबर सेल की संयुक्त टीम ने आरोपी आजाद इराकी को गिरफ्तार किया है। इससे पहले इसी प्रकरण में तुलेश्वर गुप्ता को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। मामले में अन्य आरोपियों की तलाश जारी है। इस पूरे मामले की एक महत्वपूर्ण कड़ी भाजपा पार्षद आलोक दुबे की वह शिकायत है,जिसने सरकारी जमीन के इस कथित फर्जीवाड़े को प्रशासन के संज्ञान में लाने में अहम भूमिका निभाई। दुबे ने कलेक्टर अजीत वसंत के समक्ष शिकायत कर आरोप लगाया था कि ग्राम केसरा की खसरा नंबर 1378, रकबा 3.46 हेक्टेयर शासकीय भूमि को राजस्व अभिलेखों में कूटरचना के जरिए निजी व्यक्ति के नाम दर्ज करा दिया गया और बाद में इसकी रजिस्ट्री भी अन्य लोगों के पक्ष में कर दी गई। शिकायत को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर ने इसे समय-सीमा में दर्ज कर तहसीलदार मैनपाट से जांच प्रतिवेदन तलब किया। जांच में सामने आए तथ्यों ने शिकायत की गंभीरता को उजागर कर दिया।



1954-55 के रिकॉर्ड में ऐसा खसरा, जो उस समय अस्तित्व में ही नहीं था!

जांच का सबसे चौंकाने वाला पहलू यह सामने आया कि वर्ष 1954-55 के अधिकार अभिलेख का अंतिम खसरा नंबर 650 था। ऐसे में उस समय खसरा नंबर 1378 की प्रविष्टि होना ही संभव नहीं था। जांच में यह भी सामने आया कि खसरा नंबर 1378 रिनम्बरिंग के बाद अस्तित्व में आया और पहली बार वर्ष 1995-96 के राजस्व दस्तावेजों में दर्ज हुआ। महत्वपूर्ण बात यह कि 1995-96 के बंदोबस्त अभिलेख में भी यह भूमि निजी नहीं,बल्कि शासकीय भूमि के रूप में 'छोटे झाड़ का जंगल' मद में दर्ज थी। इसके बावजूद कथित तौर पर वर्ष 1954-55 के अधिकार अभिलेख में कूटरचना कर खसरा नंबर 1378 को विजय सिंह पिता चंद्रचरण सिंह के नाम निजी भूमि के रूप में दर्शाया गया। इसके बाद विजय सिंह के मुख्तार आम दिलीप चिकवा तथा तुलेश्वर गुप्ता के माध्यम से भूमि की रजिस्ट्री आजाद इराकी पिता रियाजुद्दीन इराकी और अनुपम कुमार सिंह के नाम किए जाने की बात जांच में सामने आई।

आलोक दुबे की शिकायत पर कलेक्टर ने दिए थे पांच लोगों पर एफआईआर के निर्देश

भाजपा पार्षद आलोक दुबे की शिकायत के बाद प्रशासनिक जांच में शासकीय भूमि को निजी बताने की कथित कूटरचना सामने आई। जांच प्रतिवेदन के आधार पर कलेक्टर ने आजाद इराकी सहित कुल पांच संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराने के निर्देश तहसीलदार मैनपाट को दिए थे। साथ ही राजस्व अभिलेखों में की गई अवैध प्रविष्टियों को विलोपित कर भूमि को पुनः शासकीय मद में दर्ज करने के निर्देश भी दिए गए। इस प्रशासनिक कार्रवाई के बाद मामला पुलिस तक पहुंचा। थाना कमलेश्वरपुर में अपराध क्रमांक 82/2026 के तहत धारा 420, 467, 468, 471, 34 एवं 120(बी) भादवि के अंतर्गत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना शुरू की गई। पुलिस ने पहले तुलेश्वर गुप्ता को गिरफ्तार किया और अब आजाद इराकी को भी गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश करने की कार्रवाई की है।

पहले तुलेश्वर,अब आजाद इराकी गिरफ्तार

पुलिस के अनुसार तकनीकी जानकारी और मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर आजाद इराकी की तलाश की गई। उसे पकड़कर पूछताछ की गई, जिसमें उसकी पहचान आजाद इराकी पिता रियाजुद्दीन इराकी, उम्र 43 वर्ष, निवासी मस्जिदपारा वार्ड क्रमांक 05, जयनगर, जिला सूरजपुर के रूप में हुई। प्रकरण में संलिप्तता पाए जाने पर उसे गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है। पुलिस अब मामले में शामिल अन्य फरार आरोपियों की तलाश कर रही है।

सवाल अब भी बाकी,राजस्व रिकॉर्ड में कूटरचना हुई कैसे?

इस पूरे प्रकरण में पुलिस की गिरफ्तारी कार्रवाई अपनी जगह महत्वपूर्ण है,लेकिन जांच का सबसे अहम पहलू अभी भी बाकी है। जिस सरकारी जमीन को 1995-96 के बंदोबस्त में छोटे झाड़ के जंगल के रूप में दर्ज किया गया था, वह कथित तौर पर निजी भूमि के रूप में पुराने अधिकार अभिलेख में कैसे दर्ज हो गई? राजस्व रिकॉर्ड में इस तरह की प्रविष्टि तैयार करने,उसे प्रमाणित करने और उसके आधार पर रजिस्ट्री की प्रक्रिया पूरी होने तक किन-किन स्तरों पर जांच और सत्यापन हुआ? क्या इस पूरे खेल में किसी राजस्व अधिकारी, कर्मचारी अथवा अभिलेखागार से जुड़े व्यक्ति की भूमिका रही है? सिर्फ क्रेता-विक्रेताओं की गिरफ्तारी से पूरे फर्जीवाड़े की तह तक पहुंचना संभव नहीं होगा। यह भी जांच का विषय है कि कथित कूटरचित प्रविष्टि तैयार करने और उसे राजस्व अभिलेखों में मान्यता दिलाने में किसकी भूमिका रही। प्रशासनिक जांच में जिन तथ्यों का खुलासा हुआ है, उनके आधार पर जिम्मेदारों की पहचान कर कार्रवाई होना भी जरूरी है। भाजपा पार्षद आलोक दुबे की शिकायत से शुरू हुई यह कार्रवाई अब गिरफ्तारी तक पहुंच चुकी है। लेकिन असली सफलता तब मानी जाएगी, जब सरकारी जमीन को निजी बनाने के कथित खेल में शामिल हर व्यक्ति की भूमिका उजागर हो और शासकीय भूमि को पूरी तरह अतिक्रमण एवं अवैध दावों से मुक्त कराकर सरकारी रिकॉर्ड में सुरक्षित किया जाए।

तिलक लगाया,माला पहनाई और विशेष पकवान खिलाकर मनाया कुकुर तिहार

बेजुबान डॉग शेल्टर में हुई पूजा-अर्चना और हवन

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,10 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।
दीपावली के अवसर पर शहर के बेजुबान डॉग शेल्टर में कुकुर तिहार श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस दौरान शेल्टर में रह रहे कुत्तों को तिलक लगाया गया, फूलों की माला पहनाई गई और विशेष पकवान खिलाकर उनका सम्मान किया गया। टीम के सदस्यों ने पूजा-अर्चना और हवन कर सभी बेजुबान पशुओं के स्वस्थ एवं सुखी जीवन की कामना की। आयोजन का उद्देश्य समाज में बेजुबान पशुओं के प्रति प्रेम,सम्मान और संवेदनशीलता की भावना बढ़ाना था। शेल्टर में रह रहे घायल, बीमार और बेसहारा कुत्तों के लिए विशेष भोजन की व्यवस्था भी की गई। पूरी टीम ने मिलकर इस पर्व को उत्साहपूर्वक मनाया। शेल्टर के संस्थापक सुधांशु शर्मा ने कहा कि कुत्ते हमारे समाज और जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। वे बिना किसी स्वार्थ के इंसानों के प्रति प्रेम और वफादारी निभाते हैं। ऐसे में उनके प्रति दया, प्रेम और सम्मान रखना हमारी जिम्मेदारी है।



उन्होंने कहा कि शेल्टर में रहने वाले बेजुबान पशु उनके लिए परिवार के सदस्यों की तरह हैं। सुधांशु शर्मा ने अपील की कि दीपावली या सामान्य दिनों में भी बेजुबान जानवरों को परेशान न करें। उन पर पत्थर न फेंकें और न ही मारें। पटाखों की तेज आवाज से पशु डर जाते हैं और उन्हें काफी परेशानी होती है। त्योहार खुशियां बांटने का अवसर है, किसी जीव को तकलीफ पहुंचाने का नहीं। शेल्टर की टीम ने लोगों से अपील की कि सड़क दुर्घटना में घायल, बीमार या असहाय अवस्था में कोई पशु दिखाई दे तो उसकी अनदेखी न करें। तत्काल बेजुबान डॉग शेल्टर को सूचना दें,ताकि उसका रेस्क्यू कर उपचार और देखभाल की जा सके।

कबरा कान वाले हाथी को रोकना वन विभाग के लिए बनी चुनौती,आठ माह में 16 ग्रामीणों की ले चुका है जान

दीपावली की रात दो लोगों को कुचलने के बाद अगले दिन वृद्ध को मारा,हाथी को ट्रेंकुलाइज कर कॉलर आईडी पहनाने की तैयारी

-संवाददाता-
सूरजपुर,10 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।
सूरजपुर जिले में कबरा कान वाले हाथी का आतंक थमने का नाम नहीं ले रहा है। लगातार आक्रामक हो रहे इस हाथी ने दीपावली की रात दो ग्रामीणों को कुचलकर मार डाला। इसके अगले दिन कंदरई गांव में एक वृद्ध को भी मौत के घाट उतार दिया। पिछले आठ माह में यह हाथी 16 ग्रामीणों की जान ले चुका है। लगातार हो रही घटनाओं से वन विभाग के सामने इस हाथी को नियंत्रित करना बड़ी चुनौती बन गया है। जानकारी के अनुसार, कबरा कान वाला हाथी पिछले कई दिनों से सूरजपुर जिले के सोनगरा वन परिक्षेत्र में विचरण कर रहा है। सोमवार को वह ग्राम सकलपुर पहुंचा था। इस दौरान कुछ लोग उसका वीडियो बना रहे थे और उसे भगाने का प्रयास कर रहे थे। तभी श्यामनगर निवासी 42 वर्षीय कृष्ण राजवाड़े हाथी की चपेट में आ गए। हाथी ने उन्हें सूंड से उठाकर पटक दिया और पैरों से कुचलकर मार डाला। इस घटना के कुछ देर बाद करंजी चौकी क्षेत्र के ग्राम पंचायत सोनपुर-सू के पंडोपारा निवासी मंटूलाल (40) खेत की रखवाली करने गए थे। इसी दौरान उनका सामना कबरा कान वाले हाथी से हो गया। हाथी ने उन्हें भी कुचलकर मार डाला।

रेलवे लाइन पार कर कंदरई पहुंचा हाथी,वृद्ध को कुचला : दो ग्रामीणों की जान लेने के बाद हाथी सोमवार रात करमपुर, पार्वतीपुर,केनापारा और तेलईकछार होते हुए रेलवे लाइन पार कर कंदरई गांव पहुंच गया। यहां पेंडरखी बीट के ग्राम पंचायत कंदरई के टूरीपतरा निवासी करीब 66 वर्षीय बिशन राम को कंदरई बाजार के पास कुचलकर मार डाला। सूचना पर वन विभाग का अमला और जयनगर पुलिस मौके पर पहुंची। शव का पंचनामा करने के बाद जब पोस्टमार्टम के लिए ले जाने की तैयारी की गई तो ग्रामीणों ने विरोध जताया। अधिकारियों की समझाइश के बाद परिजन तैयार हुए। वन विभाग ने अंतिम संस्कार के लिए मृतक के परिवार को 25 हजार रुपए की तत्कालिक सहायता दी।

पखवाड़ेभर में छह लोगों की मौत : कबरा कान वाला हाथी पिछले पखवाड़ेभर में छह ग्रामीणों की जान ले चुका है। वहीं आठ महीने में इसके हमलों में 16 लोगों की मौत हो चुकी है। हाथी के लगातार आक्रामक व्यवहार को देखते हुए वन विभाग उसे ट्रेंकुलाइज कर कॉलर आईडी पहनाने के लिए शासन स्तर पर प्रयास कर रहा है। सूरजपुर वन विभाग के एसडीओ संतोष पांडेय ने बताया कि हाथी की लगातार निगरानी की जा रही है। उसके लोकेशन के आधार पर आसपास के ग्रामीणों को सतर्क किया जा रहा है, ताकि जनहानि रोकी जा सके।



88 फरार वारंटियों पर पुलिस का शिकंजा,24 घंटे में दबोचे गए आरोपी

14 साल पुराने मारपीट के मामले से लेकर एनडीपीएस प्रकरण तक के वारंटी गिरफ्तार,कोतवाली पुलिस सबसे आगे

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,10 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।
न्यायालय से वारंट जारी होने के बावजूद वर्षों तक पुलिस की पकड़ से बाहर रहने वाले फरार वारंटियों के खिलाफ सरगुजा पुलिस ने विशेष अभियान चलाकर बड़ी कार्रवाई की है। डीआईजी एवं एसएसपी राजेश कुमार अग्रवाल के निर्देश पर चलाए गए 24 घंटे के विशेष अभियान में पुलिस ने 69 स्थाई वारंट और 19 गिरफ्तारी वारंट सहित कुल 88 वारंटियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। पुलिस की इस कार्रवाई से जहां फरार वारंटियों में हड़कंप मचा, वहीं यह सवाल भी खड़ा होता है कि न्यायालय से वारंट जारी होने के बाद आखिर इतने लंबे समय तक ये आरोपी पुलिस की पकड़ से बाहर कैसे रहे? खासकर 14 साल पुराने मारपीट



के मामले में स्थाई वारंट की तामिली यह बताने के लिए पर्याप्त है कि न्यायिक प्रक्रिया और पुलिस की कार्रवाई के बीच कितनी लंबी दूरी बनी रह सकती है।

कोतवाली पुलिस ने पकड़े सबसे ज्यादा वारंटी : अभियान में थाना कोतवाली पुलिस ने सर्वाधिक 30 स्थाई वारंटियों को गिरफ्तार किया। वहीं गांधीनगर पुलिस ने 14 स्थाई वारंट और एक गिरफ्तारी वारंट सहित 15 वारंटियों को पकड़ा। मणिपुर पुलिस ने 8, धौरपुर ने 11, उदयपुर ने 5, लुंड्रा ने 3, कमलेश्वरपुर ने 3, बतौली ने 3, लखनपुर ने 4, सीतापुर ने 4 और दरिमा पुलिस ने 2 वारंटियों को गिरफ्तार किया।

14 साल बाद खुली पुलिस की नींद, पुराने मामले में गिरफ्तारी : इस अभियान में थाना लखनपुर क्षेत्र के 14 वर्ष पुराने मारपीट के मामले का स्थाई वारंटी भी पुलिस के हत्थे चढ़ा। इसके अलावा एनडीपीएस के एक प्रकरण में न्यायालय द्वारा स्थाई वारंट जारी किए जाने पर सीतापुर थाना क्षेत्र के कोट बासपारा निवासी राजेश उर्फ भैरा को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया। दोनों मामलों में वारंटियों को न्यायालय के समक्ष पेश करने की कार्रवाई की गई।

सवाल सिर्फ गिरफ्तारी का नहीं, जवाबदेही का भी : सरगुजा पुलिस की 24 घंटे में 88 वारंटियों की गिरफ्तारी निश्चित रूप से बड़ी कार्रवाई है, लेकिन इस अभियान ने पुलिस की नियमित कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े किए हैं। यदि विशेष अभियान चलाकर एक ही दिन में इतनी बड़ी संख्या में वारंटी पकड़े जा सकते हैं, तो सामान्य दिनों में इनकी गिरफ्तारी के प्रयास कितने प्रभावी रहे? 14 साल पुराने मामले में वारंटी का खुलेआम घूमते रहना भी पुलिस की निगरानी व्यवस्था पर सवाल है। अब जरूरत केवल विशेष अभियान चलाकर आंकड़े जुटाने की नहीं, बल्कि न्यायालय से जारी प्रत्येक वारंट की नियमित समीक्षा, समयबद्ध तामिली और फरार आरोपियों की लगातार निगरानी सुनिश्चित करने की है। पुलिस का कहना है कि वारंटियों के विरुद्ध यह अभियान आगे भी जारी रहेगा।

बांध में नहाने के गए युवक की डुबने से हुई मौत

-संवाददाता-
लखनपुर,10 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।
कुन्नी पुलिस चौकी अंतर्गत तीरकेला कुर्मेन बांध में नहाने के दौरान एक 25वर्षीय युवक के गहरे पानी में डूबने का मामला सामने आया है। घटना के बाद क्षेत्र में हड़कंप मच गया। युवक की तलाश के लिए मंगलवार सुबह एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंचकर खोजबीन में शुरू की 4 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद एसडीआर की टीम ने गहरे पानी से दोपहर 11 बजे युवक के शव को बाहर निकाला गया। इसके बाद कुन्नी पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करा परिजनों को सुपुर्द किया है और मार्ग काम करते हुए मामले की जांच की जा रही है।



पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार,रविंद्र खलखो पिता जुग साय खलखो,उम्र 25वर्ष, निवासी ग्राम तीरकेला 9 नवंबर दिन सोमवार सुबह मवेशियों को नहलाने के बाद युवक स्वयं नहाने के लिए बांध के गहरे पानी में उतर गया। इसी दौरान वह अचानक गहरे पानी में चला गया और देखते ही देखते पानी में डूब गया। 4 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद एसडीआरएफ की टीम ने गहरे पानी से युवक के शव को बाहर निकाला पुलिस ने सव का पंचनामा कार्रवाई कर पोस्टमार्टम करा परिजनों को सुपुर्द किया है इधर पुलिस मर्ग कायम करते हुए मामले की जांच में जुटी है

अम्बिकापुर में 18 नवंबर को जिला स्तरीय रोजगार मेले का होगा आयोजन 237 पदों पर मिलेगी नौकरी की अवसर

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,10 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।
जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र अम्बिकापुर द्वारा 18 नवंबर 2026 को जिला स्तरीय रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। रोजगार मेला प्रातः 11 बजे से शाम 4 बजे तक जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र,गंगापुरखुर्द, अम्बिकापुर में आयोजित होगा। उपसंचालक रोजगार ने बताया कि रोजगार मेले में विभिन्न निजी नियोजकों द्वारा तकनीकी एवं गैर तकनीकी श्रेणी के लगभग 237 पदों पर भर्ती के लिए अभ्यर्थियों का साक्षात्कार लिया जाएगा। इनमें शिक्षक, इलेक्ट्रिक मीटर टेक्नीशियन,इंश्योरेंस एडवाइजर और बीमा सखी पद शामिल हैं। इस रोजगार मेले में सरगुजा संभाग के सभी शिक्षित युवा शामिल होकर रोजगार के अवसरों का लाभ उठा सकते हैं। मेले में भाग लेने के लिए अभ्यर्थियों का ई-रोजगार पोर्टल www.erojar.cg.gov.in अथवा छत्तीसगढ़ रोजगार ऐप पर रोजगार पंजीयन के साथ-साथ रोजगार मेले के लिए ऑनलाइन पंजीयन कराना अनिवार्य है। जिन आवेदकों ने अभी तक रोजगार पोर्टल पर पंजीयन नहीं कराया है,वे पहले अपना पंजीयन करा सकते हैं। इच्छुक अभ्यर्थियों को रोजगार मेले में शामिल होने के लिए शैक्षणिक योग्यता की अंकसूची,निवास प्रमाण पत्र एवं पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाना होगा। निर्धारित तिथि एवं समय पर उपस्थित होकर अभ्यर्थी साक्षात्कार प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं।

जिले के 61 उपार्जन केन्द्रों में 15 नवंबर से होगी समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी

निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार हो खरीदी,सभी तैयारियां समय पर पूर्ण कर ली जाएं,धान खरीदी की प्रक्रिया में पारदर्शिता और किसानों की सुविधा का रखें विशेष ध्यान : कलेक्टर वसंत

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,10 नवम्बर 2026
(घटती-घटना)।
जिले में खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 के लिए धान उपार्जन की तैयारियां जारी हैं,धान खरीदी का कार्य 15 नवंबर से शुरू होने जा रहा है। इस महत्वपूर्ण प्रक्रिया को सुचारू और व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने हेतु जिला प्रशासन द्वारा तैयारियां की गई हैं। इसके सम्बन्ध में मंगलवार को कलेक्टर श्री अजीत वसंत की अध्यक्षता में धान खरीदी एवं उपार्जन की तैयारियों को लेकर कलेक्टरेट सभाकक्ष में प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस दौरान जिला पंचायत की मुख्य कार्यपालन अधिकारी सुश्री रोमा श्रीवास्तव उपस्थित रहीं। प्रशिक्षण में सर्व अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, तहसीलदार, खाद्य निरीक्षक, सहकारी निरीक्षक, कृषि उपज मंडी के अधिकारी तथा धान खरीदी केंद्रों से जुड़े



ऑपरेटर एवं डाटा एंट्री ऑपरेटर शामिल हुए। इस दौरान कलेक्टर श्री वसंत ने कहा कि उपार्जन केंद्रों में किसानों की सुविधा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके लिए पर्याप्त बारदाना, सुचारु तौल व्यवस्था, पेयजल, विद्युत आपूर्ति, छाया तथा अन्य आवश्यक मूलभूत सुविधाएं समय रहते सुनिश्चित की जाएं। शासन द्वारा निर्धारित सभी बुनियादी और मूलभूत सुविधाएं अनिवार्य रूप से पूरी कर ली जाएं।

जिले के 61 केन्द्रों में 15 नवंबर से होगी समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी-खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 के अंतर्गत जिले में कुल 62 हजार 471 किसानों का पंजीयन किया गया है, जिनका कुल पंजीकृत रकबा 67 हजार 929.40 हेक्टेयर है। जिले में पूर्व में संचालित 54 धान उपार्जन केंद्रों के अतिरिक्त किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए 7 नवीन धान उपार्जन केंद्र बनाए गए हैं। इसके साथ ही जिले में धान उपार्जन केंद्रों की कुल संख्या बढ़कर 61 हो गई है। इन केंद्रों के माध्यम से पंजीकृत किसानों से धान खरीदी की जाएगी। उन्होंने नवीन केंद्रों में समुचित व्यवस्था समय पर सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

धान खरीदी की प्रक्रिया में पारदर्शिता और किसानों की सुविधा का रखें विशेष ध्यान-कलेक्टर वसंत ने समिति प्रबंधकों और ऑपरेटरों को निर्देशित किया कि पंजीकृत किसानों की जानकारी,तौल,ऑनलाइन प्रविष्टि सहित सभी कार्य सावधानीपूर्वक और निर्धारित नियमों के अनुरूप ही करें। किसी भी पात्र किसान को केंद्र पर असुविधा नहीं होनी चाहिए। शासन के इस महत्वपूर्ण कार्य में सकारात्मक दृष्टिकोण से शामिल होकर अपने कार्य का गम्भीरता से निर्वहन करें। प्रशिक्षण के दौरान समर्थन मूल्य पर धान खरीदी एवं उपार्जन की प्रक्रिया तथा खरीदी कार्य को सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देशों की जानकारी दी गई।

अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्धारित प्रक्रिया के अनुरूप कार्य करने तथा खरीदी व्यवस्था से संबंधित तकनीकी एवं प्रशासनिक तैयारियां समय पर पूर्ण करने के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

CMYK

सरगुजा संभाग में हाथियों का आतंक बना अभिशाप
पांच साल में 179 लोगों की मौत



- सरगुजा संभाग के छह जिलों में लगातार बढ़ रहा मानव-हाथी संघर्ष
- जंगल से लगे गांवों में रातभर जागने को मजबूर ग्रामीण
- ट्रैंकुलाइज और रेडियो कॉलर का प्रस्ताव, अनुमति का इंतजार
- मुआवजा नहीं, जान बचाने की स्थायी व्यवस्था की मांग

जंगल का रास्ता और गांव की जिंदगी आमने-सामने,हाथियों के आतंक में उजड़ रहे परिवार

हाथियों के खौफ में जी रहा सरगुजा,मौतों का आंकड़ा बढ़ा लेकिन स्थायी समाधान अब भी दूर

हाथियों के आतंक से कराह रहा सरगुजा संभाग,पांच साल में 179 लोगों की मौत,कबरा हाथी ने छह महीने में ली 16 जानें

छत्तीसगढ़ में 23 वर्षों के दौरान हाथियों के हमलों में 737 लोगों की मौत का आंकड़ा

दीपावली की रात दो और परिवारों की खुशियां मातम में बदलीं, मुआवजे से आगे बढ़कर अब स्थायी सुरक्षा व्यवस्था की दरकार

-ओंकार पाण्डेय-

सूरजपुर,10 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)। सरगुजा संभाग के जंगलों से लगे गांवों में रहने वाले लोगों के लिए हाथियों की मौजूदगी अब केवल वन्यजीवों से जुड़ी सामान्य चुनौती नहीं रह गई है,बल्कि यह उनकी रोजमर्रा की जिंदगी पर मंडराता जानलेवा खतरा बन चुकी है, शाम ढलते ही ग्रामीणों की चिंता बढ़ जाती है,रात होते ही गांवों में सतर्कता और भय का माहौल बनने लगता है, खेतों में खड़ी फसल,घरों में रखा अनाज और वर्षों की मेहनत से बनाया गया,आशियाना हाथियों के निशाने पर आ जाता है,लेकिन इन सबसे बड़ी चिंता इंसानी जान की है, बीते वर्षों में हाथियों के हमलों ने अनेक परिवारों को उजाड़ दिया है,कहीं परिवार का कमाने वाला सदस्य नहीं रहा, तो कहीं बच्चों के सिर से पिता का साया उठ गया, जिन घरों में कभी त्योहार की खुशियां मनाई जाती थीं,वहां अब अपनों को खोने का दर्द और भविष्य की चिंता बाकी है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार सरगुजा संभाग के छह जिलों में पिछले पांच वर्षों के दौरान हाथियों के हमलों से 179 लोगों की मौत हो चुकी है,यह संख्या अपने आप में इस संकट की गंभीरता बताने के लिए पर्याप्त है,हालात की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इन दिनों सरगुजा, सूरजपुर और बलरामपुर जिले के सीमावर्ती इलाकों में विचरण कर रहे कबरा नाम से पहचाने जाने वाले एक हाथी ने महज छह महीने में 16 लोगों की जान ले ली है,दीपावली की रात भी दो लोगों की मौत होने से दो परिवारों की त्योहार की खुशियां पलभर में मातम में बदल गईं। सवाल यह है कि जब किसी एक हाथी के हमलों में लगातार इतनी बड़ी संख्या में जनहानि हो रही है, तब प्रभावित गांवों के लोगों की सुरक्षा के लिए ऐसी कौन-सी ठोस व्यवस्था है, जो उन्हें इस खतरे से बचा सके?

23 वर्षों में प्रदेश में 737 मौतें,सरगुजा क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित-हाथी-मानव संघर्ष की समस्या केवल वर्तमान परिस्थितियों तक सीमित नहीं है,छत्तीसगढ़ में वर्ष 2000 से 2023 तक के 23 वर्षों के आंकड़ों पर आधारित एक वैज्ञानिक शोध अध्ययन में हाथियों के हमलों से 737 लोगों की मौत और 91 लोगों के घायल होने की जानकारी सामने आई है,अध्ययन में प्रदेश के 19 वन मंडलों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है, आंकड़े बताते हैं कि राज्य में यह समस्या लंबे समय से बनी हुई है और इसका सबसे गंभीर प्रभाव उत्तरी छत्तीसगढ़ के वनांचल क्षेत्रों में देखने को मिला है,अध्ययन के अनुसार जशपुर वन मंडल में सर्वाधिक 152 लोगों की मौत दर्ज की गई,इसके बाद धरमजयगढ़ वन मंडल में 135, सूरजपुर वन मंडल में 107 और कोरबा वन मंडल में 64 लोगों की मौत हुई,इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि सरगुजा संभाग और उससे लगे वन क्षेत्रों में मानव-हाथी संघर्ष लंबे समय से गंभीर चुनौती बना हुआ है,हालांकि ये आंकड़े वर्ष 2000 से 2023 की अवधि के हैं, जबकि संभाग में पिछले पांच वर्षों में 179 मौतों का आंकड़ा अलग उपलब्ध जानकारी पर आधारित है,दोनों आंकड़े अलग-अलग समयावधि को दर्शाते हैं,लेकिन एक ही समस्या की गंभीरता को सामने रखते हैं।

रात होते ही गांवों में बढ़ जाता है डर,खेतों में जाना भी जोखिम-हाथी प्रभावित गांवों में रहने वाले परिवारों की दिनचर्या अब पहले जैसी नहीं रह गई है, ग्रामीणों को खेतों में काम करने,जंगल के आसपास जाने और शाम के बाद घर से बाहर निकलने से पहले कई बार सोचना पड़ता है,जिन किसानों की आजीविका धान की खेती और जंगल पर निर्भर है,उनके लिए यह स्थिति और अधिक कठिन है,खेतों में खड़ी फसल को हाथियों से बचाना भी चुनौती है और फसल की निगरानी के दौरान स्वयं की सुरक्षा सुनिश्चित करना भी,ग्रामीणों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि हाथियों की आवाजाही का कोई निश्चित समय या क्षेत्र नहीं होता,कई बार हाथियों के गांव के नजदीक पहुंचने की सूचना देर से मिलती है, ऐसे में परिवार के सदस्यों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने, बच्चों और बुजुर्गों को संभालने तथा घरों से बाहर निकलने से बचने के लिए बहुत कम समय मिलता है, वनांचल के उन गांवों में खतरा अधिक महसूस किया जाता है, जहां घर जंगल और खेतों के नजदीक हैं तथा आपातकालीन सहायता पहुंचने में समय लग सकता है, हाथियों से होने वाला नुकसान केवल जनहानि तक सीमित नहीं रहता, मकानों की क्षति,अनाज का नुकसान और खेतों में खड़ी फसलों की बर्बादी भी ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति को कमजोर करती है,पहले से सीमित संसाधनों में जीवनयापन करने वाले परिवारों के लिए इस तरह का नुकसान दोहरी मार साबित होता है,एक ओर रोजी-रोटी का संकट,दूसरी ओर जान का खतरा–इन परिस्थितियों ने कई गांवों में असुरक्षा की भावना को गहरा कर दिया है।

ट्रैंकुलाइज और रेडियो कॉलर का प्रस्ताव, कार्रवाई पर टिकी निगाहें-कबरा हाथी की लगातार बढ़ती गतिविधियों और जनहानि को देखते हुए वन विभाग की ओर से उसे ट्रैंकुलाइज करने और रेडियो कॉलर लगाने जैसे उपायों का प्रस्ताव शासन स्तर पर भेजे जाने की जानकारी सामने आई है,वन मंत्री के निर्देशों के बाद भी इन उपायों पर ठोस कार्रवाई नहीं हो पाने को लेकर सवाल उठ रहे हैं,हालांकि इस तरह की कार्रवाई में विशेषज्ञों की राय, तकनीकी आकलन,सुरक्षा और वन्यजीव प्रबंधन से जुड़े पहलुओं का ध्यान रखना आवश्यक होता है,लेकिन लगातार हो रही जनहानि के बीच निर्णय लेने और आवश्यक प्रक्रिया पूरी करने में अनावश्यक देरी की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए,रेडियो कॉलर के माध्यम से हाथी की गतिविधियों और लोकेशन की निगरानी में मदद मिल सकती है,इससे वन विभाग को उसके संभावित विचरण क्षेत्र का पूर्वानुमान लगाने और संवेदनशील गांवों को समय रहते सतर्क करने में सहायता मिल सकती है,वहीं ट्रैंकुलाइज करने का निर्णय विशेषज्ञों के तकनीकी आकलन और सुरक्षा संबंधी परिस्थितियों के आधार पर ही लिया जाना चाहिए,ग्रामीणों की मांग है कि शासन और वन विभाग इस मामले को प्राथमिकता में रखते हुए प्रस्ताव की स्थिति स्पष्ट करें और आवश्यक कार्रवाई की समय-सीमा बताएं।

मुआवजा जरूरी,लेकिन किसी की जान की भरपाई नहीं-हाथियों के हमले में किसी व्यक्ति की मौत के बाद प्रभावित परिवार को आर्थिक सहायता देना शासन की जिम्मेदारी है,लेकिन मुआवजा किसी परिवार के खोए हुए सदस्य को वापस नहीं ला सकता,परिवार का कमाने वाला सदस्य चला जाए तो बच्चों की पढ़ाई,बुजुर्गों की देखभाल और घर के रोजमर्रा के खर्चों का संकट खड़ा हो जाता है,कई बार परिवार आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर स्थिति में पहुंच जाता है,ऐसे परिवारों के लिए सहायता केवल तत्काल मुआवजे तक सीमित नहीं रहनी चाहिए,बच्चों की शिक्षा,परिवार की आजीविका और अन्य आवश्यकताओं के लिए भी समुचित सहयोग की जरूरत है,साथ ही हाथियों के हमले में घायल लोगों के उपचार और क्षतिग्रस्त मकानों तथा फसलों के नुकसान की भरपाई की प्रक्रिया सरल और समयबद्ध होनी चाहिए, लेकिन सबसे बड़ी प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि किसी दूसरे परिवार को ऐसी स्थिति का सामना ही न करना पड़े,यदि हर घटना के बाद मुआवजा देकर प्रशासन अपनी जिम्मेदारी पूरी मान लेता है,तो यह समस्या का स्थायी समाधान नहीं होगा,वास्तविक सफलता तभी होगी,जब जनहानि की घटनाओं को रोकने के लिए प्रभावी व्यवस्था जमीन पर दिखाई दे।

हाथियों के संरक्षण के साथ ग्रामीणों की सुरक्षा भी जरूरी-हाथी वन्यजीव संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्राणी हैं, उनके प्राकृतिक आवास,भोजन और पारंपरिक विचरण मार्गों का संरक्षण भी आवश्यक है,लेकिन वन्यजीव संरक्षण और ग्रामीणों की सुरक्षा को एक-दूसरे के विपरीत खड़ा नहीं किया जा सकता,दोनों के बीच संतुलन बनाना ही इस समस्या का स्थायी रास्ता है,इसके लिए हाथियों के पारंपरिक विचरण मार्गों की पहचान, जंगलों में भोजन और पानी की उपलब्धता,संवेदनशील गांवों का चिह्नांकन और आधुनिक निगरानी प्रणाली को मजबूत करना होगा,साथ ही वन विभाग,जिला प्रशासन, पुलिस और स्थानीय पंचायतों के बीच समन्वित कार्ययोजना बनानी होगी,प्रभावित गांवों के लोगों को भी जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से सुरक्षित व्यवहार और आपातकालीन सावधानियों की जानकारी दी जानी चाहिए।

179 मौतों के बाद भी सवाल कायम,आखिर कब बनेगी प्रभावी कार्ययोजना?- सरगुजा संभाग में पांच वर्षों के दौरान 179 लोगों की मौत और छत्तीसगढ़ में वर्ष 2000 से 2023 तक 737 लोगों की जान जाना बताता है कि हाथी-मानव संघर्ष अब गंभीर सामाजिक और सुरक्षा संकट बन चुका है,कबरा हाथी के छह महीने में 16 लोगों की जान लेने की जानकारी ने इस संकट को और भयावह बना दिया है,दीपावली जैसे पर्व की रात भी जब परिवारों को अपनों की मौत का सामना करना पड़े,तो यह केवल एक घटना नहीं,बल्कि पूरे सुरक्षा तंत्र के लिए चेतावनी है,अब आवश्यकता घोषणाओं और आश्वासनों से आगे बढ़कर ठोस कार्ययोजना लागू करने की है,प्रभावित गांवों की पहचान कर वहां तत्काल चेतावनी तंत्र स्थापित किया जाए,हाथियों की गतिविधियों पर तकनीकी निगरानी बढ़ाई जाए और आपात स्थिति में त्वरित सहायता पहुंचाने वाली टीमों को पर्याप्त संसाधन दिए जाएं,कबरा हाथी के मामले में प्रस्तावित उपायों की स्थिति भी सार्वजनिक की जानी चाहिए,ताकि ग्रामीणों को यह भरोसा मिल सके कि उनकी सुरक्षा के लिए प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं,सबसे बड़ा सवाल यही है कि जब पांच वर्षों में 179 लोगों की जान जा चुकी है और एक हाथी के हमलों में छह महीने के भीतर 16 मौतें हो चुकी हैं,तो आखिर कितनी और जानें जाने के बाद शासन-प्रशासन इस संकट को सर्वोच्च प्राथमिकता देगा? जंगल और इंसान के बीच संतुलन जरूरी है,लेकिन इस संतुलन की कीमत ग्रामीणों की जान देकर नहीं चुकाई जा सकती, सरगुजा संभाग के ग्रामीण अब केवल मुआवजे या घटना के बाद मिलने वाली सहायता की प्रतीक्षा नहीं कर रहे, बल्कि ऐसी व्यवस्था चाहते हैं जिसमें वे बिना भय के अपने खेतों में काम कर सकें,अपने घरों में सो सकें और त्योहारों को सुरक्षित माहौल में मना सकें।

कबरा हाथी की दहशत,छह महीने में 16 लोगों की मौत

वर्तमान समय में सरगुजा संभाग के सीमावर्ती क्षेत्रों में कबरा हाथी का विचरण वन विभाग और ग्रामीणों दोनों के लिए बड़ी चुनौती बना हुआ है, बताया जा रहा है कि यह हाथी अकेले विचरण करता है और लगातार अपना स्थान बदलता रहता है,इसकी गतिविधियां सरगुजा,सूरजपुर और बलरामपुर जिले के सीमावर्ती इलाकों में देखी जा रही हैं,एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में तेजी से पहुंचने के कारण इसकी लोकेशन पर लगातार नजर रखना और संभावित खतरे की सूचना समय रहते ग्रामीणों तक पहुंचाना कठिन हो रहा है,2 नवंबर तक उपलब्ध जानकारी में इस हाथी के हमले से 14 लोगों की मौत की बात सामने आई थी,इसके बाद दीपावली की रात दो और लोगों की मौत होने से यह संख्या 16 तक पहुंच गई,हाल की घटनाओं में सूरजपुर जिले के सोनगरा,श्यामनगर,लटोरी और बतरा क्षेत्र के आसपास भी जनहानि की जानकारी सामने आई है,लगातार बदलते विचरण क्षेत्र के कारण खतरा किसी एक गांव या एक वन परिक्षेत्र तक सीमित नहीं रह गया है,आज जिस गांव के लोग सुरक्षित महसूस कर रहे हैं,अगले दिन उसी इलाके में हाथी की मौजूदगी की सूचना उनकी चिंता बढ़ा सकती है,किसी एक हाथी के हमलों में छह महीने के भीतर 16 लोगों की मौत होना केवल वन्यजीव प्रबंधन का मामला नहीं है,बल्कि यह प्रभावित क्षेत्र में जनसुरक्षा की व्यवस्था की प्रभावशीलता पर भी गंभीर सवाल खड़ा करता है,वन विभाग के सामने हाथी की निगरानी और ग्रामीणों को सुरक्षित रखने की दोहरी जिम्मेदारी है,ऐसे में केवल हाथी की लोकेशन का पता लगाना पर्याप्त नहीं,बल्कि उस सूचना को तत्काल और विश्वसनीय तरीके से प्रभावित गांवों तक पहुंचाना भी जरूरी है।

सूचना तंत्र कमजोर तो खतरा और बढ़ेगा,गांवों में सायरन की जरूरत

हाथी प्रभावित क्षेत्रों में जनहानि रोकने के लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू समय पर सूचना पहुंचाना है,यदि हाथी की लोकेशन की जानकारी वन विभाग के पास है, लेकिन प्रभावित गांवों तक वह समय पर नहीं पहुंचती,तो निगरानी व्यवस्था का लाभ ग्रामीणों को नहीं मिल पाएगा,इसके लिए प्रत्येक संवेदनशील गांव में सायरन अथवा अलर्ट सिस्टम स्थापित करने की आवश्यकता है,हाथी की मौजूदगी की सूचना मिलते ही संबंधित गांवों में चेतावनी जारी होनी चाहिए,ग्रामीणों के मोबाइल फोन पर एसएमएस, व्हाट्सएप समूह और अन्य माध्यमों से तत्काल सूचना साझा करने की व्यवस्था भी प्रभावी हो सकती है,इसके साथ ही गांव स्तर पर प्रशिक्षित स्वयंसेवकों और वन विभाग की टीमों के बीच समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए, रात के समय नियमित गश्त,संवेदनशील मार्गों पर निगरानी और आपात स्थिति में ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाने की व्यवस्था भी जरूरी है,केवल सूचना जारी कर देना पर्याप्त नहीं होगा,यह भी सुनिश्चित करना होगा कि गांव के प्रत्येक परिवार तक चेतावनी पहुंचे,विशेष रूप से बुजुर्गों,बच्चों, अकेले रहने वाले लोगों और ऐसे परिवारों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए,जिनके घर जंगल या हाथियों के संभावित मार्ग के नजदीक हैं,संकट के समय ग्रामीणों को किस स्थान पर जाना है,किससे संपर्क करना है और किस तरह सुरक्षित रहना है,इसकी जानकारी पहले से दी जानी चाहिए।

सड़क हादसे में दो दोस्त की मौत

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,10 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)। पुलिस चौकी नागपुर के उजियारपुर के पास 7 नवंबर को अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार दो दोस्त घायल हो गए। हादसे में एक की मौत मौके पर ही हो गई। जबकि दूसरे की मौत इलाज के दौरान मेडिकल कॉलेज अस्पताल में हो गया। जानकारी के अनुसार लव कुमार पासवान पिता राजकुमार पासवान 18 वर्ष एमसीबी जिले के चनवारीडांड़ का रहने वाला था। वह 7 नवंबर को अपने दोस्त प्रियांशु के साथ बाइक क्रमांक सीजी 16 सीटी 3162 से पटना कोरिया गया था। वपस लौटने के दौरान उजियारपुर चौकी नागपुर के पास अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में प्रयांशु की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि गंभीर रूप से घायल लव कुमार को इलाज के लिए बैकुंठपुर अस्पताल से रेफर करने पर मेडिकल कॉलेज अस्पताल अंबिकापुर में भर्ती कराया गया। यहां इलाज के दौरान 8 नवंबर को मौत हो गई।

अज्ञात वाहन की टक्कर से स्कूटी सवार युवक की मौत

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,10 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)। लखनपुर थाना क्षेत्र के ग्राम रजपुरी के पास 7 नवंबर की रात को अज्ञात वाहन की टक्कर से स्कूटी सवार युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गया। उसे इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टर ने जांच के दौरान उसे मृत घोषित कर दिया। जानकारी के अनुसार राजकुमा मानिकपुरी पिता पारसनाथा उम्र 34 वर्ष लखनपुर थाना क्षेत्र के ग्राम मांजा का रहने वाला था और दत्ताकालोनी अंबिकापुर में अक्षत जायसवाल के घर ड्राइवरी का काम करता था। 7 नवंबर को 7 बजे वह स्कूटी से घर जाने निकला था। रात करीब 10 बजे मोबाइल से उसकी पत्नी को फोन कर किसी व्यक्ति ने जानकारी दी की इसका रजपुरी के पास एक्सिडेंट हो गया है। सूचना पर परिजन मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुंचे तब तक राजकुमार की मौत हो चुकी थी।

गौरव दिवस पर जनजातीय महा तिहार की धूम,कर्मा नृत्य ने बांधा समां,विधायक प्रबोध मिंज हुए शामिल





-संवाददाता-

लखनपुर,10 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)। सरगुजा जिले के लखनपुर विकासखंड अंतर्गत ग्राम लोसंगा में 10 नवंबर 2026 को जनजातीय गौरव सप्ताह के अवसर पर जनजातीय लोकनृत्य महोत्सव एवं आदिवासी महा तिहार का भव्य आयोजन किया गया। धान खरीदी केंद्र मैदान में आयोजित इस महोत्सव में पारंपरिक कर्मा नृत्य, मांदर की थाप और जनजातीय संस्कृति की शानदार झलक देखने को मिली। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लुंड्रा विधानसभा क्षेत्र के विधायक माननीय प्रबोध मिंज शामिल हुए। पारंपरिक करमा गीतों और मांदर की गूंज के बीच उनका भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। विधायक प्रबोध मिंज ने मैदान में स्थापित करम पेड़ की डाल के नीचे विधिवत पूजा-अर्चना कर क्षेत्र की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इसके पश्चात महान जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर महोत्सव का शुभारंभ किया गया। महोत्सव में विभिन्न पंचायतों से पहुंचे कर्मा नर्तक दलों ने अपनी पारंपरिक वेशभूषा और शानदार नृत्य प्रस्तुतियों से दर्शकों का मन मोह लिया। मांदर की थाप पर थिरकते कलाकारों ने पूरे आयोजन स्थल को जनजातीय संस्कृति और लोककला के रंग में रंग दिया। कर्मा नृत्य की मनमोहक प्रस्तुतियों ने ऐसा समां बांधा कि उपस्थित ग्रामीणजन झूमने पर मजबूर हो गए।

कार्यक्रम में जनपद अध्यक्ष शशिकला सिंह, मंडल अध्यक्ष रवि महंत,विक्रम सिंह, राकेश साहू, भईयालाल साहू, प्रविण यादव, प्रमोद सिंह, जमुना प्रसाद, श्रवण सिंह, प्रदीप सिंह,कुदरत बहाल, हरिलाल,विभिन्न पंचायतों के सरपंच,जनपद सदस्य, सचिव उपेंद्र सिंह सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि,कलाकार एवं ग्रामीणजन उपस्थित रहे। ग्राम लोसंगा में आयोजित यह महोत्सव केवल सांस्कृतिक कार्यक्रम तक सीमित नहीं रहा,बल्कि जनजातीय समाज की पहचान,परंपरा, लोककला और गौरवशाली विरासत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास भी साबित हुआ। पूरे आयोजन में उत्साह और उल्लास का माहौल देखने को मिला।

कृषि मंत्री रामविचार नेताम के मुख्य आतिथ्य में करमा महोत्सव संपन्न



-संवाददाता-

बलरामपुर,10 नवंबर 2026 (घटती-घटना)। जनजातीय संस्कृति,लोककला और परंपराओं के संरक्षण व संवर्धन के उद्देश्य से जिले के विकासखंडों में विकासखंड स्तरीय करमा महोत्सव का उत्साहपूर्वक आयोजन किया गया। जनपद पंचायत रामचंद्रपुर में आयोजित महोत्सव में प्रदेश के कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री रामविचार नेताम मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। वहीं शंकरगढ़ के स्व. लरंग साय स्टेडियम और राजपुर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (महुआपारा) खेल मैदान में हुए आयोजनों में सामरी विधायक श्रीमती उद्धेश्वरी पैकरा मुख्य अतिथि रहीं। महोत्सव में पारंपरिक वेशभूषा में सजे कलाकारों ने मांदर की थाप पर करमा नृत्य और लोकगीतों की मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं। लोकधुनों की लय और कलाकारों के उत्साह ने पूरे वातावरण को सांस्कृतिक रंग में रंग दिया,जिसका दर्शकों ने तालियों से उत्साहवर्धन किया। उल्लेखनीय है कि उत्तर छत्तीसगढ़ क्षेत्र जनजातीय लोकनृत्य महोत्सव (करमा महोत्सव) 2026 ग्राम पंचायत, विकासखंड, जिला और राज्य स्तर पर आयोजित किया जा रहा है। विकासखंड स्तर पर प्रथम और द्वितीय स्थान पाने वाले दल जिला स्तरीय महोत्सव में प्रस्तुति देंगे। जिला स्तर के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा और उन्हें राज्य स्तर पर प्रदर्शन का अवसर मिलेगा।



शिकायतों की फाइल मोटी...कार्रवाई की फाइल खाली!

सहकारिता में आखिर किसका चलता है सिक्का?

क्या शिकायतों पर संज्ञान लेना भूल गया प्रशासन या सहकारिता के घोटालों पर किसी का संरक्षण भारी पड़ रहा है?

- शिकायतों पर संज्ञान लेने की परंपरा खत्म या सहकारिता के घोटालों पर किसी का संरक्षण भारी? सूरजपुर में छह साल के हिसाब की मांग!
- 2.25 करोड़ का पशु ऋण घोटाला, 5552 क्विंटल धान शॉर्टेज और 67.33 हेक्टेयर रकबा विवाद! फिर भी कार्रवाई पर सवाल
- बर्खास्तगी से बहाली और फिर कुर्सी की दावेदारी! सहकारिता विभाग में आखिर चल क्या रहा है?
- धान की कमी, पशु ऋण घोटाले के आरोप और रकबा पंजीयन विवाद! सहकारिता की फाइलों में आखिर कौन दबा रहा है सच?
- घोटालों की शिकायतों पर कार्रवाई ठप्प,जिम्मेदारों के हौसले बुलंद! क्या सहकारिता विभाग में जवाबदेही खत्म हो गई?
- पहले 3559 क्विंटल धान शॉर्टेज, फिर 2.25 करोड़ का पशु ऋण मामला, अब 5552 क्विंटल की कमी! आखिर कार्रवाई कब?
- सहकारिता में शिकायतों का कोई मोल नहीं? छह साल के कथित घोटालों पर प्रशासन मौन, किसानों का भरोसा दांव पर
- शिकायतकर्ता परेशान, आरोपी बेफिक्र! सूरजपुर की सहकारी समितियों में छह साल का स्वतंत्र ऑडिट कराने की मांग
- क्या सहकारिता में घोटाले करो, रकम जमा करो और फिर कुर्सी पर बैठो? सूरजपुर के मामलों ने खड़े किए बड़े सवाल


शिवप्रसादनगर में फर्जी रकबे का खेल!
दो साल, एक जैसा खेल?
खबरें कई बार छपीं, दस्तावेज सामने आए, फिर भी प्रशासन की आँखें बंद क्यों?
खेत में नहीं बढ़ी जमीन,कागज पर रकबा
बढ़ा और बिक गया 4728.80 क्विंटल धान!


सूरजपुर में महाघोटाले की गूंज...7.7 एकड़ जमीन
ट्रांसफर और 67.33 हेक्टेयर फर्जी रकबा का खेल
जमीन,धान और बैंकिंग का जालः शिवप्रसादनगर समिति से जुड़ा बड़ा खुलासा


जेल से जमानत, बर्खास्तगी के बाद बढ़ती संपत्ति!
7.7 एकड़ जमीन और नई Creta के पीछे आखिर किसका संरक्षण?
जेल,बर्खास्तगी और फिर 7.7 एकड़ जमीन! आखिर
कहां से आई बढ़ती संपत्ति,कौन करेगा निष्पक्ष जांच?

-ओंकार पाण्डेय-

सूरजपुर,10 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)। सरकार चाहे किसी भी दल की हो, शासन और प्रशासन की सबसे बड़ी जिम्मेदारी जनता के विश्वास को बनाए रखना होती है, जनता इसी उम्मीद के साथ शिकायत करती है कि उसकी आवाज सुनी जाएगी,उसके द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों की जांच होगी और यदि भ्रष्टाचार या वित्तीय अनियमितता प्रमाणित होती है तो जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी,लेकिन जब गंभीर शिकायतों के बाद भी कार्रवाई का परिणाम सामने नहीं आता, दस्तावेजों में दर्ज सवाल अनुत्तरित रह जाते हैं और विवादों से जुड़े मामलों में जिम्मेदारी तय नहीं होती, तब शासन-प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल उठना स्वाभाविक है। सूरजपुर जिले में सहकारिता विभाग और धान खरीदी केंद्रों से जुड़े मामलों को देखने के बाद अब यही सवाल उठ रहा है कि क्या उचित शिकायतों पर संज्ञान लेने की परंपरा कमजोर पड़ गई है? क्या शिकायतों की गंभीरता अब फाइलों में दर्ज होने तक सीमित रह गई है? या फिर सहकारिता विभाग में कुछ ऐसे मामले हैं जिन पर कार्रवाई की गति इतनी धीमी है कि आरोपों से घिरे लोगों का मनोबल कम होने के बजाय और बढ़ता दिखाई दे रहा है? यह सवाल किसी राजनीतिक आरोप या हवा में की गई चर्चा के आधार पर नहीं उठ रहा है, भैयाथान जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के अंतर्गत संचालित समितियों और धान खरीदी केंद्रों से जुड़े पिछले लगभग छह वर्षों के मामलों की स्वतंत्र जांच की मांग इसलिए उठ रही है, क्योंकि अलग-अलग वर्षों में धान की कमी, कथित पशु ऋण अनियमितता, रकबा पंजीयन और वित्तीय लेन-देन से जुड़े गंभीर मामले सामने आए हैं, इनमें कुछ मामलों में एफआईआर, बर्खास्तगी, निलंबन और विभागीय कार्रवाई जैसे घटनाक्रम भी दर्ज हैं, बावजूद इसके कई मामलों का अंतिम परिणाम और जिम्मेदारी तय होने की स्थिति सार्वजनिक रूप से स्पष्ट नहीं है,इसी कड़ी में साधना कुशवाहा का मामला सहकारिता विभाग की कार्यप्रणाली पर बड़ा सवाल बनकर सामने आया है, एक ओर उनके कार्यकाल से जुड़े कई विवाद और विभागीय कार्रवाई के घटनाक्रम हैं,दूसरी ओर विभागीय सूत्रों के हवाले से उनके समिति प्रबंधक बनने के लिए प्रयासरत होने की चर्चा है, सवाल यह है कि आखिर इतने विवादों के बाद भी महत्वपूर्ण पद की दावेदारी किस आधार पर हो रही है? क्या विभाग ने उनके पूरे सेवा रिकॉर्ड की समीक्षा की है? क्या पुराने मामलों का निराकरण हो चुका है? और यदि नहीं, तो समिति प्रबंधक जैसे महत्वपूर्ण पद के लिए उनकी पात्रता पर स्थिति स्पष्ट क्यों नहीं की जा रही?

साधना कुशवाहा प्रकरण: नौ घटनाक्रम,नौ बड़े सवाल- साधना कुशवाहा से जुड़े मामलों का वर्षवार घटनाक्रम देखें तो एक के बाद एक ऐसे प्रकरण सामने आते हैं जिनकी निष्पक्ष जांच और विभागीय जवाबदेही जरूरी है।

1. धान खरीदी वर्ष 2020-21: 3559 क्विंटल धान की कमी का मामला- धान खरीदी वर्ष 2020-21 में 3559 क्विंटल धान की कमी का मामला सामने आया था, इस मामले में लाखों रुपये की आर्थिक अनियमितता के आरोप लगाए गए,धान खरीदी केंद्र में खरीदी गई उपज,भौतिक स्टॉक और रिकॉर्ड में दर्ज मात्रा के बीच इतनी बड़ी कमी कैसे आई, यह अपने आप में गंभीर सवाल है,आखिर 3559 क्विंटल धान कहां गया? स्टॉक का सत्यापन किसने किया? कमी सामने आने के बाद जिम्मेदारी किसकी तय हुई? क्या संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों से जवाब मांगा गया? क्या पूरी राशि की वसूली हुई और क्या विभागीय जांच का अंतिम निष्कर्ष सामने आया? यदि धान खरीदी में इतनी बड़ी कमी दर्ज हुई थी, तो केवल आंकड़े दर्ज कर देना पर्याप्त नहीं है, किसानों की उपज और सरकारी धन से जुड़े इस मामले में जिम्मेदारी तय होना भी उतना ही जरूरी है।

नौ घटनाक्रम,लेकिन जवाबदेही का हिसाब कौन देगा?

इन नौ घटनाक्रमों को एक साथ देखने पर सबसे बड़ा सवाल सहकारिता विभाग की कार्यप्रणाली पर उठता है,एक मामले में धान की कमी, दूसरे में करोड़ों रुपये के पशु ऋण वितरण का आरोप, फिर बर्खास्तगी, उसके बाद समिति में वापसी, दोबारा धान खरीदी केंद्र की जिम्मेदारी, रकबा पंजीयन का विवाद, फिर धान की कमी और निलंबन के बाद बहाली, क्या इन सभी घटनाओं की अलग-अलग जांच हुई? क्या हर मामले में जिम्मेदारी तय की गई? क्या विभाग ने कार्रवाई का अंतिम परिणाम सार्वजनिक किया? यदि आरोप निराधार थे तो संबंधित कर्मचारी को दोषमुक्त करने वाले आदेश सामने क्यों नहीं रखे जाते? और यदि आरोपों में तथ्य हैं तो कार्रवाई का परिणाम स्पष्ट क्यों नहीं है? कहीं ऐसा तो नहीं कि सहकारिता विभाग में कार्रवाई की प्रक्रिया केवल नोटिस, निलंबन और बहाली के बीच घूमती रहती है और मूल सवाल वहीं के वहीं रह जाते हैं? यदि ऐसा नहीं है तो विभाग को दस्तावेजों के साथ स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए।

2. वर्ष 2022-23: 2.25 करोड़ रुपये के कथित पशु ऋण घोटाले में एफआईआर-साधना कुशवाहा का नाम वर्ष 2022-23 में सामने आए कथित 2.25 करोड़ रुपये के पशु ऋण वितरण घोटाले से भी जुड़ा, इस मामले में एफआईआर दर्ज हुई और उन्हें जेल जाना पड़ा, वर्तमान में वह अग्रिम जमानत पर हैं तथा प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन बताया गया है,यह मामला केवल ऋण वितरण की प्रक्रिया में सामान्य त्रुटि का आरोप नहीं है,2.25 करोड़ रुपये की राशि और पशु ऋण वितरण से जुड़े दस्तावेजों की सत्यता की जांच जरूरी है, ऋण किसके नाम पर स्वीकृत हुए? लाभार्थियों का सत्यापन किसने किया? ऋण की राशि किसे मिली? पशु खरीदी के दस्तावेजों की जांच किसने की? और इस पूरी प्रक्रिया में किस-किस स्तर पर जिम्मेदारी थी? न्यायालय में विचाराधीन मामले में दोषसिद्धि का निर्णय न्यायालय ही करेगा,लेकिन विभागीय स्तर पर इस प्रकरण की स्थिति और उससे संबंधित सेवा संबंधी कार्रवाई को स्पष्ट करना भी आवश्यक है।

3. 7 जनवरी 2023: सेवा से बर्खास्तगी का आदेश-सोनपुर समिति के तत्कालीन प्राधिकृत अधिकारी द्वारा कथित 2.25 करोड़ रुपये के पशु ऋण वितरण और 3559 क्विंटल धान शॉर्टेज के आरोपों के आधार पर साधना कुशवाहा को 7 जनवरी 2023 को सेवा से बर्खास्त किए जाने का आदेश जारी किया गया था,अब सवाल यह है कि जिस कर्मचारी के विरुद्ध इन गंभीर मामलों के आधार पर बर्खास्तगी की कार्रवाई की गई, उसके बाद सेवा में वापसी का रास्ता कैसे खुला? क्या बर्खास्तगी आदेश को निरस्त किया गया? क्या किसी सक्षम प्राधिकारी ने बहाली का आदेश जारी किया? क्या विभागीय जांच में कोई नया निष्कर्ष आया? और क्या बर्खास्तगी के आधार बने आरोपों की स्थिति में कोई परिवर्तन हुआ? बर्खास्तगी कोई साधारण प्रशासनिक टिप्पणी नहीं होती। यह एक औपचारिक कार्रवाई है, इसलिए उसके बाद सेवा में वापसी हुई तो उसका आधार और आदेश भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

4. बर्खास्तगी के बाद समिति में वापसी: आखिर किस आदेश से खुला रास्ता?-बर्खास्तगी के बाद साधना कुशवाहा की समिति में वापसी का घटनाक्रम भी कई सवाल खड़े करता है, उपलब्ध जानकारी के अनुसार उनकी वापसी की प्रक्रिया को लेकर स्पष्टता नहीं है,यदि बहाली या पुनर्नियुक्ति का आदेश जारी हुआ था, तो किस अधिकारी ने जारी किया और किन परिस्थितियों में जारी किया? क्या बर्खास्तगी के आदेश में कोई संशोधन हुआ? क्या अपील में उन्हें राहत मिली? क्या किसी जांच में आरोपों से मुक्त किया गया? या फिर किसी अन्य प्रशासनिक प्रक्रिया से उन्हें दोबारा सेवा में लिया गया? यदि पूरी प्रक्रिया नियमों के तहत हुई है तो संबंधित आदेश सार्वजनिक करने में विभाग को कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए, आखिर पारदर्शिता का अर्थ ही यही है कि महत्वपूर्ण प्रशासनिक निर्णयों का आधार स्पष्ट हो।

5. धान खरीदी वर्ष 2024-25: शिवप्रसादनगर केंद्र की प्रभारी नियुक्ति-बर्खास्तगी और पूर्व के विवादों के बाद वर्ष 2024-25 में साधना कुशवाहा को शिवप्रसादनगर धान खरीदी केंद्र का प्रभारी बनाए जाने की जानकारी सामने आई, अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि यह जिम्मेदारी किसके आदेश पर दी गई? क्या नियुक्ति से पहले उनके सेवा रिकॉर्ड की समीक्षा की गई? क्या पशु ऋण प्रकरण,बर्खास्तगी और धान शॉर्टेज के पुराने मामले नियुक्ति करने वाले अधिकारियों के संज्ञान में थे? यदि थे, तो उन्हें केंद्र प्रभारी बनाने का आधार क्या था? धान खरीदी केंद्र प्रभारी की जिम्मेदारी केवल खरीदी की निगरानी तक सीमित नहीं होती। इसमें किसानों का पंजीयन,खरीदी, स्टॉक,भुगतान और रिकॉर्ड का रखरखाव शामिल होता है, ऐसे महत्वपूर्ण कार्य में नियुक्ति करते समय पारदर्शिता और जवाबदेही का ध्यान रखना जरूरी है।

6. धान खरीदी वर्ष 2024-25: 67.33 हेक्टेयर कथित फर्जी रकबा पंजीयन का मामला-वर्ष 2024-25 की धान खरीदी के दौरान शिवप्रसादनगर केंद्र से जुड़ा एक और विवाद सामने आया। आरोप है कि 67.33 हेक्टेयर का कथित फर्जी रकबा पंजीयन कर कई हजार क्विंटल धान का विक्रय किया गया। इस संबंध में शिकायत की गई और समाचार भी प्रकाशित हुए,लेकिन उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस मामले में ठोस कार्रवाई का स्पष्ट परिणाम सामने नहीं आया है,यदि 67.33 हेक्टेयर रकबा पंजीयन में अनियमितता हुई थी, तो उसका सत्यापन किसने किया? संबंधित किसानों के नाम पर दर्ज भूमि का राजस्व रिकॉर्ड से मिलान हुआ या नहीं? वास्तविक खेती और पंजीकृत रकबे में कितना अंतर था? कितने क्विंटल धान का विक्रय हुआ? क्या संबंधित किसानों के बयान लिए गए? और शिकायत की जांच का निष्कर्ष क्या निकला? रकबा पंजीयन धान खरीदी व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है,यदि पंजीयन में फर्जीवाड़े का आरोप सामने आता है,तो यह केवल कागजी गलती नहीं बल्कि खरीदी व्यवस्था की पारदर्शिता से जुड़ा मामला है,शिकायत और समाचार प्रकाशन के बाद भी यदि कार्रवाई का परिणाम सामने नहीं आता, तो विभाग को इसका जवाब देना चाहिए।

7. धान खरीदी वर्ष 2025-26: फिर शिवप्रसादनगर केंद्र की प्रभारी नियुक्ति- वर्ष 2024-25 में रकबा पंजीयन को लेकर विवाद सामने आने के बाद भी वर्ष 2025-26 में साधना कुशवाहा को शिवप्रसादनगर धान खरीदी केंद्र का प्रभारी बनाए जाने की जानकारी मिली, यहां सवाल और गंभीर हो जाता है। क्या पिछले वर्ष के विवाद की जांच पूरी हो चुकी थी? क्या शिकायत का निराकरण हो गया था? क्या विभाग ने उनके विरुद्ध सामने आए आरोपों की समीक्षा की थी? क्या केंद्र प्रभारी नियुक्त करने के लिए कोई विशेष आदेश जारी हुआ? यदि विभाग ने सभी नियमों का पालन किया था तो नियुक्ति आदेश और उसके आधार को सार्वजनिक किया जाना चाहिए,आखिर धान खरीदी केंद्र की जिम्मेदारी किसी की व्यक्तिगत पसंद का विषय नहीं,बल्कि किसानों और सरकारी धन से जुड़ी जवाबदेही है।

8. वर्ष 2025-26: भौतिक सत्यापन में लगभग 5552 क्विंटल धान की कमी-धान खरीदी वर्ष 2025-26 में भौतिक सत्यापन के दौरान लगभग 5552 क्विंटल धान कम पाए जाने का मामला सामने आया, इस धान कमी के आरोप में साधना कुशवाहा को निलंबित किए जाने की जानकारी है,अब सवाल यह है कि 5552 क्विंटल धान की कमी कैसे हुई? खरीदी रिकॉर्ड और भौतिक स्टॉक में इतना अंतर क्यों आया? कमी का जिम्मेदार कौन था? क्या संबंधित कर्मचारियों और अधिकारियों से पूछताछ हुई? क्या पूरी राशि की वसूली की गई? क्या इस मामले में विभागीय जांच पूरी हुई? यदि भौतिक सत्यापन में कमी पाई गई थी तो केवल निलंबन की कार्रवाई पर्याप्त नहीं है,जांच का निष्कर्ष और जिम्मेदारी तय करने की प्रक्रिया भी सामने आनी चाहिए। आखिर धान की कमी का हिसाब कौन देगा?

9. निलंबन के बाद बहाली का रहस्य और अब समिति प्रबंधक बनने की कथित दौड़-5552 क्विंटल धान कमी के मामले में निलंबन के बाद साधना कुशवाहा की बहाली किस आधार पर हुई,यह सवाल अब भी स्पष्ट जवाब की प्रतीक्षा कर रहा है,बहाली का आदेश किस अधिकारी ने जारी किया? क्या जांच पूरी हो गई थी? क्या उन्हें आरोपों से मुक्त किया गया? क्या धान की कमी का हिसाब और आर्थिक जिम्मेदारी तय हो चुकी थी? इसी बीच विभागीय सूत्रों के हवाले से चर्चा है कि साधना कुशवाहा अब समिति प्रबंधक बनने के लिए प्रयासरत हैं और इसके लिए विभागीय स्तर पर दौड़-भाग कर रही हैं,हालांकि इस कथित प्रयास की आधिकारिक पुष्टि और नियुक्ति का कोई आदेश सामने नहीं आया है,सवाल यह नहीं कि कोई कर्मचारी समिति प्रबंधक बनने का सपना क्यों देख रहा है, सवाल यह है कि इतने गंभीर मामलों और विभागीय कार्रवाई के घटनाक्रम के बीच उसकी पात्रता का आकलन किस आधार पर होगा? क्या विभाग पुराने मामलों की समीक्षा किए बिना नई जिम्मेदारी सौंपने पर विचार कर सकता है? क्या समिति प्रबंधक की कुर्सी के लिए सेवा रिकॉर्ड और वित्तीय जवाबदेही का कोई महत्व नहीं?

छह साल की फाइलें खुलें तो सामने आ सकता है सहकारिता का पूरा हिसाब-यह मामला केवल साधना कुशवाहा तक सीमित नहीं होना चाहिए,भैयाथान जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के अंतर्गत संचालित समितियों और धान खरीदी केंद्रों के पिछले छह वर्षों के रिकॉर्ड की स्वतंत्र जांच कराई जानी चाहिए,धान खरीदी की कुल मात्रा, मिलों को भेजे गए धान, शेष स्टॉक,भौतिक सत्यापन, रकबा पंजीयन,किसानों के नाम पर हुए विक्रय, ऋण वितरण और बैंक खातों से हुए लेन-देन का मिलान कराया जाए,जिन मामलों में शिकायतें दर्ज हैं, उनकी जांच रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए। जिन मामलों में कार्रवाई हुई है,उसका अंतिम परिणाम बताया जाए,जिन मामलों में आरोप प्रमाणित नहीं हुए,वहां भी विभाग स्पष्ट करे कि जांच में क्या सामने आया,यदि व्यवस्था पारदर्शी है तो स्वतंत्र जांच से किसी को डरने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। बल्कि इससे शिकायतों की वास्तविकता सामने आएगी और सहकारिता व्यवस्था के प्रति किसानों का भरोसा मजबूत होगा।

सरकार और प्रशासन से सीधे सवाल—जवाब कब मिलेगा?

1. क्या भैयाथान बैंक के अंतर्गत संचालित सभी समितियों और धान खरीदी केंद्रों के पिछले छह वर्षों के रिकॉर्ड की स्वतंत्र जांच कराई जाएगी?
2. साधना कुशवाहा की 7 जनवरी 2023 की बर्खास्तगी के बाद समिति में वापसी किस आदेश से हुई?
3. वर्ष 2024-25 और 2025-26 में शिवप्रसादनगर धान खरीदी केंद्र का प्रभारी किस आधार पर नियुक्त किया गया?
4. 67.33 हेक्टेयर कथित फर्जी रकबा पंजीयन की शिकायत पर जांच और कार्रवाई का परिणाम क्या है?
5. लगभग 5552 क्विंटल धान की कमी के मामले में निलंबन के बाद बहाली किस आधार पर हुई?
6. 3559 क्विंटल धान शॉर्टेज और 2.25 करोड़ रुपये के पशु ऋण प्रकरण में विभागीय कार्रवाई की वर्तमान स्थिति क्या है?
7. क्या समिति प्रबंधक पद के लिए साधना कुशवाहा के पूरे सेवा रिकॉर्ड और लंबित मामलों की समीक्षा की जाएगी?
8. क्या इन मामलों में शामिल अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों की भूमिका भी जांच के दायरे में आएगी?

शिकायतों पर कार्रवाई नहीं तो जनता का भरोसा कैसे बचेगा?-जनता शिकायत इसलिए करती है क्योंकि उसे शासन-प्रशासन से उम्मीद होती है, किसान अपनी मेहनत की कमाई और उपज के साथ होने वाली अनियमितता पर आवाज उठाता है,तो उसे यह भरोसा होना चाहिए कि उसकी शिकायत को गंभीरता से लिया जाएगा, लेकिन यदि शिकायतों पर कार्रवाई का परिणाम सामने नहीं आता,तो जनता के मन में व्यवस्था को लेकर सवाल पैदा होना स्वाभाविक है,सरकार की जवाबदेही केवल यह बताने से पूरी नहीं होती कि शिकायत प्राप्त हो गई है या जांच के आदेश जारी कर दिए गए हैं,असली जवाबदेही तब दिखती है जब जांच पूरी हो,जिम्मेदारी तय हो और कार्रवाई का परिणाम सार्वजनिक हो,आखिर शिकायतों का उद्देश्य केवल फाइलों में संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि व्यवस्था में सुधार और दोषियों की जवाबदेही तय करना है,सहकारिता विभाग को अब यह स्पष्ट करना होगा कि वह इन मामलों को कितनी गंभीरता से देख रहा है,क्या वह केवल शिकायतों का जवाब देकर औपचारिकता पूरी करेगा या पिछले छह वर्षों के रिकॉर्ड की स्वतंत्र जांच कराकर वास्तविक स्थिति सामने लाएगा? सवाल सत्ता पक्ष या विपक्ष का नहीं,किसानों के हित और जनता के विश्वास का है। सवाल यह है कि शिकायत करने वाले को न्याय मिलेगा या उसे भी फाइलों के चक्कर में अपनी उम्मीद गंवानी पड़ेगी? अब सूरजपुर के किसानों और आम जनता को आश्वासन नहीं,कार्रवाई का हिसाब चाहिए।

सीएमओ की कार्यशैली के खिलाफ खोंगापानी में जनप्रतिनिधियों ने खोला मोर्चा

उपाध्यक्ष विवेक कुमार चतुर्वेदी के नेतृत्व में एसडीएम को सौंपा ज्ञापन, जनता के जरूरी काम ठप होने और अभद्र व्यवहार का लगाया आरोप

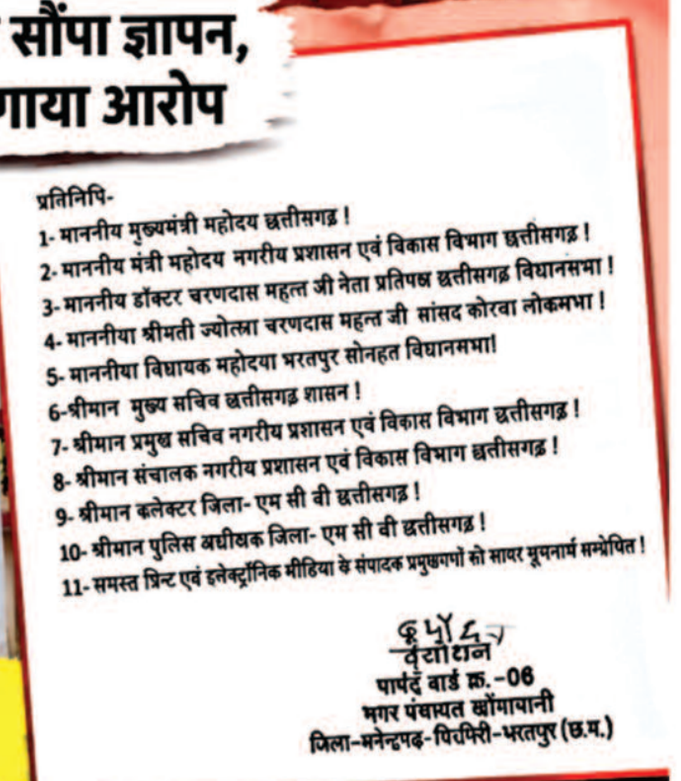


विवेक कुमार चतुर्वेदी
उपाध्यक्ष
नगर पंचायद खोंगापानी



10 से 13 नवंबर तक काले वस्त्र पहनकर सांकेतिक विरोध

16 नवंबर को कार्यालय में तालाबंदी की चेतावनी



प्रतिनिपि-
1- माननीय मुख्यमंत्री महोदय छत्तीसगढ़ !
2- माननीय मंत्री महोदय नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग छत्तीसगढ़ !
3- माननीय डॉक्टर चरणदास महन्त जी नेता प्रतिपक्ष छत्तीसगढ़ विधानसभा !
4- माननीया श्रीमती ज्योत्स्ना चरणदास महन्त जी सांसद कोरबा लोकसभा !
5- माननीया विधायक महोदया भरतपुर सोनहत विधानसभा!
6-श्रीमान मुख्य सचिव छत्तीसगढ़ शासन !
7- श्रीमान प्रमुख सचिव नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग छत्तीसगढ़ !
8- श्रीमान संचालक नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग छत्तीसगढ़ !
9- श्रीमान कलेक्टर जिला- एम सी वी छत्तीसगढ़ !
10- श्रीमान पुलिस अधीक्षक जिला- एम सी वी छत्तीसगढ़ !
11- समस्त प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के संपादक प्रमुखगणों को सादर सूचनार्थ सम्प्रेषित !

कृपया दृष्टिदान
पार्षद वार्ड क्र.-06
नगर पंचायत खोंगापानी
जिला-मनेन्द्रगढ-चिरमिरी-भरतपुर (छ.ग.)

जनप्रतिनिधियों के प्रमुख आरोप

- राशन कार्ड, जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र व अन्य जरूरी काम ठप
- प्रशासनिक जानकारी साझा नहीं की जाती
- जनप्रतिनिधियों के साथ अभद्र व्यवहार
- नगर पंचायत के वाहन व मशीनरी अन्यत्र भेजने का आरोप

खोंगापानी नगर पंचायत में प्रशासनिक टकराव,
सीएमओ के खिलाफ आर-पार की लड़ाई का ऐलान

सीएमओ पर मनमानी और अभद्र व्यवहार के आरोप,16 नवंबर को तालाबंदी की चेतावनी...

नगर पंचायत में जनप्रतिनिधि बनाम सीएमओ,काले कपड़े पहनकर होगा विरोध...

राशन कार्ड से प्रमाण पत्र तक के काम प्रभावित होने का आरोप,सीएमओ के खिलाफ लामबंद हुए पार्षद

खोंगापानी में सीएमओ के खिलाफ जनप्रतिनिधियों का हल्लाबोल, तालाबंदी तक पहुंचेगा विरोध!

-राजेन्द्र शर्मा-

खोंगापानी/एमसीबी,10 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

नगर पंचायत खोंगापानी में मुख्य नगरपालिका अधिकारी (सीएमओ) की कार्यशैली को लेकर अब निर्वाचित जनप्रतिनिधियों ने खुलकर विरोध शुरू कर दिया है,नगर पंचायत उपाध्यक्ष विवेक कुमार चतुर्वेदी के नेतृत्व में पार्षदों एवं अन्य जनप्रतिनिधियों ने सीएमओ अंजना वाईकिल्फ की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठाते हुए अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व), मनेंद्रगढ़ को ज्ञापन सौंपा है,जनप्रतिनिधियों का आरोप है कि नगर पंचायत कार्यालय में आम नागरिकों के जरूरी काम प्रभावित हो रहे हैं, निर्वाचित प्रतिनिधियों को प्रशासनिक कार्यों की जानकारी नहीं दी जा रही और सवाल पूछने पर कथित रूप से अभद्र व्यवहार किया जाता है, इतना ही नहीं,नगर पंचायत के स्वामित्व वाले वाहनों और अन्य संसाधनों को भी बिना स्पष्ट जानकारी दिए अन्यत्र भेजे जाने का आरोप लगाया गया है,मामला अब केवल अधिकारी और जनप्रतिनिधियों के बीच कार्यशैली को लेकर असहमति तक सीमित नहीं रह गया है, जनप्रतिनिधियों ने ज्ञापन में आंदोलन की तारीखें तय करते हुए साफ कर दिया है कि यदि समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो विरोध को और व्यापक किया जाएगा,10 नवंबर से 13 नवंबर तक काले वस्त्र पहनकर सांकेतिक प्रदर्शन और 16 नवंबर को नगर पंचायत कार्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार पर तालाबंदी की चेतावनी दी गई है।

राशन कार्ड से प्रमाण पत्र तक, नागरिक सेवाएं प्रभावित होने का आरोप- जनप्रतिनिधियों ने ज्ञापन में सबसे प्रमुख मुद्दा आम नागरिकों के जरूरी कामों में कथित देरी और बाधा को बनाया है,उनका आरोप है कि नगर पंचायत कार्यालय में नवीन राशन कार्ड बनवाने,राशन कार्ड में परिवार के सदस्यों के नाम जुड़वाने,जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करने तथा अनुपलब्धता प्रमाण पत्र सहित विभिन्न जनकल्याणकारी सेवाओं से जुड़े काम प्रभावित हो रहे हैं,इन सेवाओं के लिए कार्यालय पहुंचने वाले लोगों को बार-बार चक्कर लगाने पड़ रहे हैं,लेकिन समय पर काम नहीं हो पा रहे हैं,जनप्रतिनिधियों का कहना है कि इन समस्याओं का सबसे अधिक असर गरीब, मजदूर और जरूरतमंद परिवारों पर पड़ता है, जिन प्रमाण पत्रों और दस्तावेजों की जरूरत आम नागरिकों को सरकारी योजनाओं का लाभ लेने तथा अन्य जरूरी कार्यों के लिए होती है, उन्हीं के लिए उन्हें परेशान होना पड़ रहा है, सवाल यह है कि यदि स्थानीय निकाय के कार्यालय में नागरिकों के बुनियादी काम ही समय पर नहीं होंगे तो आम जनता को राहत देने वाली व्यवस्था का उद्देश्य कैसे पूरा होगा? हालांकि इन आरोपों की वास्तविक स्थिति और लंबित प्रकरणों की संख्या प्रशासनिक जांच के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी।

10 से 13 नवंबर तक काले कपड़े पहनकर होगा विरोध- जनप्रतिनिधियों ने ज्ञापन के माध्यम से अपने आंदोलन की रूपरेखा भी घोषित कर दी है, इसके तहत 10 नवंबर से 13 नवंबर 2026 तक नगर पंचायत कार्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार के सामने काले वस्त्र धारण कर सांकेतिक विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। प्रदर्शन का समय प्रतिदिन सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक निर्धारित किया गया है,जनप्रतिनिधियों के अनुसार, काले कपड़े पहनकर विरोध दर्ज कराने का उद्देश्य नगर पंचायत की कथित अव्यवस्थाओं और आम नागरिकों को हो रही परेशानियों की ओर प्रशासन का ध्यान आकर्षित करना है,उनका कहना है कि वे पहले चरण में सांकेतिक विरोध के माध्यम से अपनी मांगें रखेंगे और प्रशासन से समस्याओं के निराकरण की अपेक्षा करेंगे।

16 नवंबर को तालाबंदी की चेतावनी,प्रशासन के सामने चुनौती- ज्ञापन में जनप्रतिनिधियों ने स्पष्ट किया है कि यदि 13 नवंबर तक उनकी मांगों पर सकारात्मक पहल नहीं होती और नगर पंचायत की कार्यप्रणाली में सुधार नहीं आता तो 16 नवंबर 2026 को कार्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार पर तालाबंदी कर प्रदर्शन किया जाएगा,आंदोलन का नेतृत्व नगर पंचायत उपाध्यक्ष विवेक कुमार चतुर्वेदी करेंगे, जनप्रतिनिधियों ने प्रस्तावित आंदोलन के दौरान किसी भी अप्रिय स्थिति के लिए शासन-प्रशासन को जिम्मेदार ठहराने की बात भी ज्ञापन में कही है,इस चेतावनी के बाद अब प्रशासन के सामने चुनौती है कि वह समय रहते दोनों पक्षों की बात सुने और विवाद को बढ़ने से पहले समाधान की दिशा में पहल करे।

आरोपों पर सीएमओ और प्रशासन का पक्ष भी महत्वपूर्ण- नगर पंचायत की कार्यप्रणाली को लेकर जनप्रतिनिधियों द्वारा लगाए गए आरोप गंभीर हैं,इनमें नागरिक सेवाओं में देरी,जनप्रतिनिधियों के साथ कथित अभद्र व्यवहार और सरकारी संसाधनों के उपयोग से जुड़े सवाल शामिल हैं,ऐसे में निष्पक्षता के लिए सीएमओ का पक्ष और कार्यालयीन अभिलेखों की जांच भी जरूरी है,यह स्पष्ट होना चाहिए कि कौन-कौन से नागरिक कार्य लंबित हैं, उनके निराकरण में देरी के कारण क्या हैं और नगर पंचायत के वाहनों एवं मशीनरी को अन्यत्र भेजने के पीछे क्या प्रशासनिक प्रक्रिया अपनाई गई है,अब निगाहें एसडीएम और जिला प्रशासन के अगले कदम पर टिकी हैं। क्या प्रशासन ज्ञापन में उठाए गए मुद्दों की जांच कराकर जनप्रतिनिधियों को संतुष्ट कर पाएगा,या फिर खोंगापानी नगर पंचायत में विरोध प्रदर्शन और तालाबंदी की नौबत आएगी? फिलहाल सीएमओ की कार्यशैली को लेकर उठा विवाद नगर पंचायत की प्रशासनिक व्यवस्था और जनप्रतिनिधियों के बीच समन्वय पर गंभीर सवाल खड़े कर रहा है।

निर्वाचित पार्षदों को जानकारी नहीं, सवाल पूछने पर अभद्रता का आरोप

नगर पंचायत उपाध्यक्ष विवेक कुमार चतुर्वेदी और पार्षदों ने सीएमओ पर जनप्रतिनिधियों के साथ कथित अभद्र व्यवहार करने तथा नगर पंचायत के महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्यों की जानकारी साझा नहीं करने का आरोप भी लगाया है, ज्ञापन के अनुसार,जब पार्षद नगरहित से जुड़े विषयों,विकास कार्यों और कार्यालयीन गतिविधियों की जानकारी मांगते हैं तो उन्हें संतोषजनक जवाब नहीं मिलता,जनप्रतिनिधियों का आरोप है कि कई बार बातचीत के दौरान उनके साथ उचित व्यवहार भी नहीं किया जाता,यह मुद्दा इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि नगर पंचायत में निर्वाचित पार्षद अपने-अपने वार्ड की जनता के प्रति जवाबदेह होते हैं, वार्डों की समस्याओं, विकास कार्यों,नागरिक सुविधाओं और शासकीय योजनाओं की स्थिति की जानकारी मिलना उनके लिए आवश्यक है,यदि जनप्रतिनिधियों को ही जानकारी उपलब्ध नहीं होगी तो वे जनता की समस्याओं को संबंधित अधिकारियों के सामने किस आधार पर रखेंगे? जनप्रतिनिधियों ने प्रशासन से इस पूरे मामले में हस्तक्षेप कर जवाबदेही तय करने की मांग की है।

नगर पंचायत के वाहन और मशीनरी अन्यत्र भेजने पर भी सवाल

ज्ञापन में नगर पंचायत की संपत्तियों और संसाधनों के उपयोग को लेकर भी आपत्ति जताई गई है,जनप्रतिनिधियों का आरोप है कि निकाय के स्वामित्व वाले वाहन, ट्रैक्टर-ट्रॉली,पानी के टैंकर,ग्रास कटर,छोटे चारपहिया वाहन और अन्य मशीनरी उपकरणों को मनमाने तरीके से अन्यत्र भेजा जा रहा है,जनप्रतिनिधियों का कहना है कि ये संसाधन नगर पंचायत क्षेत्र के नागरिकों की सुविधाओं और स्थानीय निकाय के कार्यों के लिए उपलब्ध हैं, ऐसे में इन्हें किस उद्देश्य से,किसके निर्देश पर और किन परिस्थितियों में दूसरे स्थान पर भेजा जा रहा है,इसकी जानकारी जनप्रतिनिधियों को मिलनी चाहिए,इस मामले में कई महत्वपूर्ण सवाल खड़े होते हैं, क्या इन संसाधनों को अन्यत्र भेजने के लिए विधिवत अनुमति ली गई है? उनका उपयोग किस काम में किया जा रहा है? क्या उनके आवागमन और उपयोग का रिकॉर्ड संधारित किया जा रहा है? जनप्रतिनिधियों ने इन सभी बिंदुओं पर स्पष्ट जानकारी उपलब्ध कराने और आवश्यक जांच कराने की मांग की है।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत 16 यात्रियों का जत्था अमृतसर तीर्थ यात्रा पर रवाना

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना,स्वर्ण मंदिर और वाघा बॉर्डर का करेंगे भ्रमण...







-संवाददाता-

एमसीबी,10 नवम्बर 2026 (घटती-घटना)।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत जिला मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के 16 यात्रियों का जत्था अमृतसर तीर्थ यात्रा के लिए रवाना हुआ। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने बस को हरी झंडी दिखाकर तीर्थयात्रियों को पेंड्रारोड रेलवे स्टेशन के लिए रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने सभी यात्रियों को सुखद, सुरक्षित एवं मंगलमय यात्रा की शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत 10 नवंबर से 15 नवंबर 2026 तक आयोजित इस यात्रा में जिले के 15 हितग्राही एवं एक संरक्षक/अनुरक्षक सहित कुल 16 सदस्य शामिल हैं। यात्रा के दौरान तीर्थयात्री अमृतसर स्थित प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर में मत्था टेककर आध्यात्मिक शांति एवं आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही वे ऐतिहासिक वाघा बॉर्डर का भी भ्रमण करेंगे। इस योजना का उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों एवं पात्र हितग्राहियों को प्रदेश के बाहर स्थित प्रमुख धार्मिक स्थलों की निःशुल्क तीर्थ यात्रा का अवसर उपलब्ध कराना है,ताकि वे अपनी धार्मिक आस्था और श्रद्धा के अनुरूप तीर्थस्थलों का दर्शन कर सकें। जिला प्रशासन एवं समाज कल्याण विभाग एमसीबी द्वारा यात्रा के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। इस अवसर पर अपर कलेक्टर लिंगराज सिदार,मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अविनाश खरे, उप संचालक समाज कल्याण विभाग अंजना रोस बेक,एसडीएम शशि शेखर मिश्रा,पूर्व संसदीय सचिव चंपादेवी पावले,नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिमा सरजू यादव,उपाध्यक्ष धर्मेंद्र पटवा, जिला पंचायत सदस्य रामजीत लकड़ा,रोहित वर्मा,सरजू यादव,महेन्द्र पाल,बुद्धू सिंह,आशीष सिंह,उमेश जायसवाल,सुनैना विश्वकर्मा, नीलू जायसवाल,लखन श्रीवास्तव,रवि यादव,बबीता सिंह एवं जमील शाह सहित नगर पालिका के पार्षदगण, जनप्रतिनिधि तथा स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

C M Y K

किसान बनना चाहते थे पवन कल्याण



डेब्यू के बाद 6 ब्लॉकबस्टर का ऐतिहासिक रिकॉर्ड,फिर 10 साल नहीं चली कोई फिल्म

अभिनय से लेकर राजनीति तक में अपना सिक्का जमाने वाले अभिनेता पवन कल्याण कैसे किसान बनने की चाहत छोड़ अभिनेता बने जो शख्स कभी अभिनय में आना ही नहीं चाहता था और किसानी करके अपना जीवन बिताना चाहता था, किसे पता था कि वह सिनेमा का सुपरस्टार बन जाएगा। हम बात कर रहे हैं अभिनेता पवन कल्याण की। पवन कल्याण साउथ सिनेमा के सुपरस्टार हैं। उनकी फिल्में कई बार बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा चुकी हैं। 90 दशक के दौर में उन्होंने बैक-टू-बैक 6 ब्लॉकबस्टर फिल्में देकर इतिहास रच दिया था। मगर शायद ही आपको पता हो कि स्टार फैमिली से ताल्लुल रखने वाले पवन कल्याण खुद अभिनेता नहीं बनना चाहते थे। उनका तो किसान बनने का प्लान था। फिर कैसे किसान बनने का ख्वाब छोड़ पवन कल्याण सिनेमा के चमकते सितारे बन गए? यहां देखिए उनकी फिल्मोग्राफी पर एक नजर...

कराटे में चैम्पियन थे पवन कल्याण

2 सिंतबर 1971 को जन्मे पवन कल्याण का पूरा नाम कोनिडेला पवन कल्याण है। चिरंजीवी और नागेंद्र बाबू उनके बड़े भाई हैं जो तेलुगु सिनेमा के नामी सितारे हैं। एक तरफ उनके दोनों भाई बड़े पर्दे पर अभिनय का जादू चला रहे थे, वहीं कराटे में चैम्पियन बन रहे थे। उनके पास कराटे में ब्लैक बेल्ट है।

किसान बनना चाहते थे पवन कल्याण

सिर्फ इतना ही नहीं,पवन कल्याण का कराटे के बाद फिल्मों में आने का भी कोई प्लान नहीं था। दरअसल,वह किसान बनना चाहते थे। उन्हें खेती में बहुत दिलचस्पी थी। हालांकि,चिरंजीवी की पत्नी और पवन की भाभी सुरेखा ने उन्हें एक्टिंग करने की सलाह दी। इसके बाद ही वह अभिनय में आए।

पवन कल्याण की बैक-टू-बैक सुपरहिट फिल्में

पवन कल्याण की पहली फिल्म 1996 में अक्कड़ा अम्मायी इक्कदा अब्बायी आई थी। इसके बाद उन्होंने 1997 से 1999 के बीच लगातार 6 ब्लॉकबस्टर फिल्में दी और सिनेमा के सुपरस्टार बन गए।

करियर में आए उतार-चढ़ाव

फिल्म ठोली प्रेमा के लिए उन्हें 1998 में नेशनल फिल्म अवॉर्ड भी मिला था। यही नहीं, 2013 में वह फोर्ब्स इंडिया के 100 सेलिब्रिटी लिस्ट में भी शामिल थे। करियर की शुरुआत तो दमदार हुई थी लेकिन उतार-चढ़ाव भी आया। ढाई दशक के करियर में जॉनी से लेकर गुडुंबा शंकर और टीनमार समेत कई फिल्में आई जो बॉक्स ऑफिस पर नहीं चल पाई। हालांकि,असफलताओं के बीच भी उन्होंने कई बार ब्लॉकबस्टर अंदाज में कमबैक किया। पवन कल्याण न केवल शानदार अभिनेता हैं,बल्कि उन्होंने निर्देशन और लेखन में भी हुनर दिखाया है। अब वह अभिनय के साथ-साथ राजनीति में भी काम कर रहे हैं। 2024 में भारी वोटों से जीत के बाद वह आंध्र प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री बने।



बेबो के दिवाली आउटफिट ने खींचा ध्यान, नेकलेस के पेंडेंट पर क्यों मचा बवाल?

फैशन की बात करें तो करीना कपूर खान अपने खुद के नियम बनाती हैं। चाहे रेड कार्पेट पर ग्लैमरस अंदाज में दिखना हो या किसी त्योहार का जश्न, बेबो को बखूबी पता है कि सबका ध्यान अपनी ओर कैसे खींचना है। इस दिवाली भी कुछ ऐसा ही हुआ। बॉलीवुड की इस डीवा ने पारंपरिक त्योहारों वाले फैशन से हटकर एक शाही अंदाज अपनाया। उनके शानदार एक्सेसरीज ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा,जिनमें से एक 200 साल पुरानी शाही विरासत से जुड़ी थी। करीना और उनके पति सैफ अली खान ने दिवाली को बेहद शानदार तरीके से मनाया, और दोनों ने एक बेहतरीन शाही फैशन मिसाल पेश की। हालांकि,सबसे ज्यादा चर्चा करीना के शानदार लुक की रही।

करीना कपूर का शाही दिवाली लुक

जब वी मेट की अभिनेत्री ने पुनीत बलाना का बेज (हल्के भूरे रंग का) कफ्तान पहना था, जिस पर असली चांदी की बारीक हाथ की कढ़ाई की गई थी। इसके साथ उन्होंने मैचिंग पगड़ी और कई लेयर वाले नेकलेस पहने,जिससे उनका लुक पारंपरिक शालीनता और शाही आकर्षण का एक बेहतरीन मिश्रण लग रहा था।

करीना का आयत-उल-कुर्सी पेंडेंट

अभिनेत्री ने अपने लुक को और खास बनाने के लिए अपने निजी कलेक्शन की कुछ कीमती चीजें पहनीं। इनमें उनकी शादी का एक सोने का चोकर और एक ऐसी चेन शामिल थी, जिसमें भोपाल की बेगम का 30 कैरेट का पन्ना जड़ा था। इस पन्ने पर आयत-उल-कुर्सी खुदी हुई थी।

सोशल मीडिया यूजर्स नाराज

हालांकि, करीना के इस शाही फैशन स्टेटमेंट को सोशल मीडिया पर कई लोगों ने पसंद नहीं किया। कई यूजर्स ने आयत-उल-कुर्सी खुदे हुए पन्ने को एक्सेसरी के तौर पर पहनने के उनके फैसले पर सवाल उठाए हैं। इसे लेकर ऑनलाइन बहस छिड़ गई है, और कुछ लोगों का कहना है कि यह पवित्र कुरान की आयत का अनादर है।

एक यूजर ने कमेंट किया,यह बहुत ही अपमानजनक है। दूसरे ने लिखा,पवित्र कुरान की आयतों वाली ज्वेलरी या एक्सेसरी पहनने का एक तरीका होता है,क्योंकि ये बहुत पवित्र हैं। इसके लिए कुछ नियम और बहुत सम्मान की जरूरत होती है। पवित्र आयतों का कभी भी अनादर नहीं होना चाहिए! एक तीसरे यूजर ने उनके स्टाइल पर सवाल उठाते हुए लिखा,फैशन स्टेटमेंट या कोई बड़ी गलती? दिवाली पार्टी में आयत-उल-कुर्सी वाला पन्ने का हार पहनना! सेलिब्रिटी और उनके स्टाइलिस्ट,बिल्कुल भी समझ नहीं रखते। सोशल मीडिया के एक और यूज़र ने लिखा,मुझे पता चला है कि इस हरे पत्थर पर आयत-उल-कुरसी लिखी हुई है। अगर यह सच है,तो इसे इस तरह पहनना बहुत अनादरपूर्ण है।

200 साल पुरानी कलगी और इसका शाही कनेक्शन

इस शानदार एक्सेसरी का इतिहास बहुत दिलचस्प है। एका कल्चरल रिसोर्सेज एंड रिसर्च की फाउंडर और डायरेक्टर दीप्ति शशिधरन ने सोशल मीडिया पर इसके शाही महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भोपाल के आखिरी नवाब,हमीदुल्लाह खान ने 1921-22 में प्रिंस ऑफ वेल्स, एडवर्ड के लिए ऑनरी एड-डी-कैंप (सहायक) के रूप में काम किया था। प्रिंस ऑफ वेल्स के शाही बैज में मौजूद तीन पंखों को इस शानदार हीरे की कलगी में उकेरा गया है,जिसे मोतियों की चार लड़ियों से जोड़ा गया है। दीप्ति के अनुसार, यह विरासत हमीदुल्लाह खान से उनकी बेटी बेगम साजिदा सुल्तान के पास पहुंची और अंत में उनके पोते सैफ अली खान को मिली। अब करीना ने मोतियों से सजी अपनी पगड़ी के साथ इसे पहनकर,इस ऐतिहासिक चीज़ के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। ये दोनों ही चीज़ें सैफ के परिवार से जुड़ी हैं,क्योंकि उनकी दादी साजिदा सुल्तान,भोपाल के आखिरी नवाब की बेटी थीं। अपने लुक के लिए,करीना ने आंखों में गहरा काजल,स्मोकी आईशैडो, कंटूर्ड चीक्स,न्यूड पिंक लिप्स और भरपूर हाइलाइटर का इस्तेमाल किया। उनके सीधे और लेयर्ड बालों ने उनके इस ग्लैमरस लुक को पूरा किया।

करीना कपूर की आने वाली फिल्में

प्रोफेशनल फ्रंट की बात करें तो,करीना कपूर खान को आखिरी बार मेघना गुलज़ार की क्राइम ड्रामा दायरा में देखा गया था,जिसमें उनके साथ पृथ्वीराज सुकुमारन भी थे। जहां उनकी फिल्में दर्शकों का ध्यान खींचती रहती हैं,वहीं उनके फैशन चॉइस भी हमेशा चर्चा का विषय बने रहते हैं। और इस दिवाली, बेबो ने एक बार फिर साबित कर दिया कि जब शाही फैशन और एक खास स्टाइल स्टेटमेंट बनाने की बात आती है,तो उनसे बेहतर कोई नहीं कर सकता!



कॉफी विद करण में कियारा आडवाणी का दिखा प्रेग्नेंसी ग्लो,फ्लॉन्ट किया बेबी बंप,सिद्धार्थ मल्होत्रा ने बताया बेडरूम रूल

कियारा आडवाणी और सिद्धार्थ मल्होत्रा कॉफी विद करण में एक साथ नजर आएंगे। दूसरी प्रेग्नेंसी का ऐलान करने के बाद एक्ट्रेस कियारा पहली बार अपने पति सिद्धार्थ के साथ इस चैट शो मस्ती करते दिखाई देंगी सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी कॉफी विद करण सीजन 9 में पहली बार एक साथ नजर आने वाले हैं। करण जौहर के इस पॉपुलर चैट शो में यह कपल अपने प्यार और शादीशुदा जिंदगी से जुड़े कई दिलचस्प किस्से शेयर करते नजर आने वाले हैं। साथ ही वे अपनी शादी की खूबसूरत यादें ताजा करेंगे और शो के होस्ट करण जौहर के साथ हंसी-मजाक करते भी नजर आएंगे। नए प्रोमो में सिद्धार्थ ने यह भी बताया कि वे अपनी प्रोफेशनल लाइफ को अपनी पर्सनल लाइफ से कैसे अलग रखते हैं। उन्होंने कहा कि वे अपने काम को अपने बेडरूम तक नहीं लाते हैं।

कॉफी विद करण में नजर आएंगे कियारा और सिद्धार्थ

मंगलवार को मेकर्स ने एक नया प्रोमो जारी किया, जिसमें इस बातचीत की एक झलक देखने को मिली। अपने दूसरे बच्चे के माता-पिता बनने जा रहे इस कपल का स्वागत करते हुए, करण ने उनकी शादी के बारे में बात करने से पहले उन्हें बेहतरीन और हमेशा खूबसूरत रहने वाला बताया। इस प्रोमो को शेयर करते हुए जियो हॉटस्टार ने इंस्टाग्राम पर लिखा, उनकी कॉफी पीने की इच्छा पूरी हो गई है और अब एक नई कहानी शुरू होने वाली है। कॉफी विद करण सीजन 9 का पांचवां एपिसोड बुधवार शाम 7 बजे सिर्फ जियो हॉटस्टार के द पीकॉक हब पर स्ट्रीम होगा। इससे पहले शो में करीना कपूर और सैफ अली खान साथ में नजर आए थे।

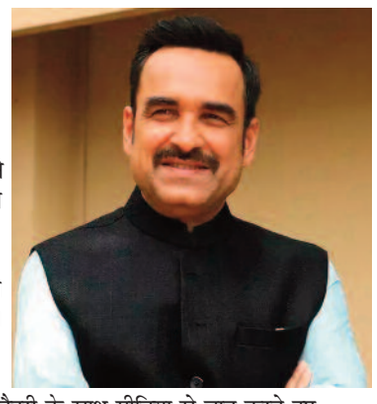
सिद्धार्थ मल्होत्रा ने रोल प्ले को लेकर किया खुलासा

करण जौहर को सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी की पर्सनल लाइफ के बार में भी बात करता देखा जा सकता है। प्रोमो में दिखाया जाता है कि जब करण ने पूछा कि क्या उन्होंने कभी कैमरे के पीछे ऑफ-स्क्रीन कोई खास रोल प्ले किया है तो सिद्धार्थ ने मजाकिया अंदाज में कहा,हम काम को घर पर नहीं लाना चाहते और बेडरूम में तो बिल्कुल भी नहीं। अब सोशल मीडिया पर सिद्धार्थ मल्होत्रा का बेडरूम रूल सभी का ध्यान खींच रहा है।

क्या कियारा आडवाणी नहीं कर रहीं तीसरे बच्चे की प्लानिंग?

इस मजेदार बातचीत के दौरान करण ने सिद्धार्थ और कियारा से पूछा कि वे कैसे सुनिश्चित करते हैं कि उनकी डेट नाइट सिर्फ डिनर तक ही सीमित न रहे।

संवेदनशीलता और अभिनयः पंकज त्रिपाठी का बड़ा खुलासा



अभिनेता पंकज त्रिपाठी, जो अपनी आने वाली स्ट्रीमिंग फिल्म पारिवारिक मनोरंजन की रिलीज की तैयारी कर रहे हैं,ने बताया है कि अभिनेता स्वभाव से बहुत संवेदनशील होते हैं,क्योंकि वे एक साथ कई जिंदगियां जीते हैं। मुंबई के गोरेगांव ईस्ट इलाके में अपनी सह-कलाकार अदिति राव हैदरी के साथ मीडिया से बात करते हुए, अभिनेता ने कहा कि आजकल वे खुद को बेहतर ढंग से समझने के लिए आध्यात्मिकता का अभ्यास कर रहे हैं। बातचीत के दौरान,उन्होंने बताया कि आध्यात्मिकता ने उन्हें जीवन के उतार-चढ़ाव पर तुरंत प्रतिक्रिया न देने में मदद की है। हालाँकि, एक अभिनेता के रूप में हर भावना को गहराई से महसूस करना उनका मुख्य काम है, जो कि उन्होंने आध्यात्मिकता में जो सीखा है, उसके बिल्कुल विपरीत है। जब उनसे पूछा गया कि वे इस विरोधाभास को कैसे संभालते हैं,तो उन्होंने कहा, कला के क्षेत्र में यह ठीक है, और यह पेशे का एक हिस्सा भी है। कला में,एक किरदार लिखा जाता है,और उससे यह उम्मीद की जाती है कि वह परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया दे। इसके लिए जागरूकता की जरूरत होती है–यह जानने की, एक साक्षी बनने की। मुझे एहसास होता है कि मेरे अंदर कोई भावना आई है; क्या मैं इस भावना पर तुरंत प्रतिक्रिया दूँ या सोच-समझकर जवाब दूँ? यह भावना कहाँ से आई? वह किरदार कैसे सोचता है? यह एक अजीब बात है जिसे बहुत से लोग नहीं समझ पाते। अभिनेता इतने संवेदनशील क्यों होते हैं? क्योंकि अपनी खुद की जिंदगी के अलावा, वे हर साल कुछ और जिंदगियां भी जीते हैं। उन्होंने आगे कहा,इसलिए,इसका भी असर पड़ता है। एक आम इंसान केवल अपनी चुनौतियों का सामना करता है। लेकिन एक अभिनेता, अपनी खुद की चुनौतियों के साथ-साथ,अपने किरदार की चुनौतियों का भी सामना करता है। इसी वजह से, वे बहुत संवेदनशील हो जाते हैं। ऐसे में, एक अभिनेता के जीवन के लिए आध्यात्मिकता और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। अभिनेता को यह एहसास होना चाहिए कि किरदार उन पर हावी हो रहा है,और उनके भीतर एक भावनात्मक उथल-पुथल चल रही है। उन्होंने आगे कहा, जीवन और अभिनय दो अलग-अलग चीजें हैं। लेकिन अगर आप जीवन को बेहतर ढंग से समझते हैं, तो आप बेहतर अभिनय कर पाएंगे। और जीवन को समझने के लिए,आपको अभिनय को समझने की जरूरत नहीं है।

खेल समाचार

19 एशिया कप के सेमीफाइनल की चारों टीमें तय

कल फिर भिड़ेंगे भारत और पाकिस्तान



नई दिल्ली,10 नवम्बर 2026। भारतीय अंडर-19 क्रिकेट टीम ने एशिया कप 2026 के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। इसके साथ ही सेमीफाइनल की चारों टीमें तय हो गई हैं। एसीसी अंडर-19 एशिया कप में अब खिताब की जंग और रोमांचक होने वाली है। टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचने वाली चारों टीमों के नाम तय हो गए हैं। भारत ने श्रीलंका को हराकर अंतिम-4 में अपनी जगह पक्की कर ली है। अब सेमीफाइनल में उसका सामना अफगानिस्तान से होगा,जबकि दूसरे मुकाबले में पाकिस्तान और बांग्लादेश की टीमें आमने-सामने होंगी। दोनों सेमीफाइनल मुकाबले 12 नवंबर को खेले जाएंगे। इससे एक बार फिर भारत और पाकिस्तान के बीच मुकाबला होने की संभावना बढ़ गई हैं।

भारत ने 10 नवंबर को खेले गए मुकाबले में यूएई को 70 रन से हराकर सेमीफाइनल का टिकट कटाया। टीम इंडिया के लिए इस जीत के हीरो आर्यवीर सहवाग रहे, जिन्होंने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 160 रन की पारी खेली। उनके अलावा विनीत ने भी 67 रन का अहम योगदान दिया। दोनों की पारियों की बदौलत भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 309 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। यह मौजूदा टूर्नामेंट का अब तक का सबसे बड़ा टीम स्कोर भी रहा।

आर्यवीर ने खेली शानदार पारी

आर्यवीर ने अपनी 168 गेंदों की पारी में 17 चौके और 7 छक्के लगाए। उन्होंने शुरुआत में संभलकर बल्लेबाजी की, लेकिन क्रीज पर जमने के बाद यूएई के गेंदबाजों पर जमकर हमला बोला। इससे पहले बांग्लादेश ने मलेशिया के खिलाफ 303 रन बनाए थे। 309 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी यूएई की टीम भारतीय गेंदबाजों के सामने टिक नहीं सकी। भारतीय गेंदबाजों ने शुरुआत से ही सटीक लाइन और लेंथ के साथ दबाव बनाए रखा। ईशान सूद ने शानदार गेंदबाजी करते हुए चार विकेट अपने नाम किए। उन्होंने अपनी यॉर्कर से यूएई के बल्लेबाजों को काफी परेशान किया। हालांकि, आखिरी ओवरों में खुधादाद और अयोबी ने कुछ तेज रन बनाकर हार का अंतर कम करने की कोशिश की, लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सके।

टीम इंडिया को दूसरे मैच में पाकिस्तान से मिली थी हार

भारतीय टीम ने टूर्नामेंट की शुरुआत नेपाल को हराकर की थी, लेकिन दूसरे मुकाबले में उसे पाकिस्तान के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। ऐसे में सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए यूएई के खिलाफ जीत जरूरी थी। भारतीय खिलाड़ियों ने दबाव के इस मुकाबले में शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत दर्ज की और अंतिम-4 में पहुंच गए। गौरतलब है कि दोनों सेमीफाइनल मुकाबले अल अमेरात में खेले जाएंगे। पहला मैच मिनिस्ट्री टर्फ-2 और दूसरा मुकाबला मिनिस्ट्री टर्फ-1 पर होगा। इन दोनों मुकाबलों की विजेता टीमें खिताब के लिए 14 नवंबर को फाइनल में भिड़ेंगी। फाइनल में भारत और पाकिस्तान के बीच मुकाबला होने की संभावना है।

सिंगापुर से भिड़ेंगे भारत के युवा फुटबॉलर

कुआलालंपुर,10 नवम्बर 2026। भारतीय अंडर-17 पुरुष फुटबॉल टीम ब्लू कोल्ट्स बुधवार, 11 नवंबर को सिंगापुर के खिलाफ मुकाबले के साथ एएफसी अंडर-17 एशियन कप 2027 क्वालिफायर में अपने अभियान की शुरुआत करेगी। यह महत्वपूर्ण मुकाबला मलेशिया की राजधानी कुआलालंपुर के कुआलालंपुर फुटबॉल स्टेडियम में भारतीय समयानुसार शाम 6 :30 बजे खेला जाएगा। भारतीय टीम का लक्ष्य लगातार दूसरी बार एएफसी अंडर-17 एशियन कप में जगह बनाना और प्रतियोगिता के इतिहास में 11वीं बार क्वालिफाई करना है। मुख्य कोच मेहराजुद्दीन वाडू के मार्गदर्शन में टीम ने पिछले दो महीनों के दौरान व्यापक तैयारियां की हैं।

न्यायालय तहसीलदार अम्बिकापुर , जिला-सरगुजा (छ0ग0)

ईश्तहार रा0प्र0क्र0-/ब-121/2026-27

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक गंगापाल आ0कन्हाई पाल व अन्य निवासी ग्राम सुभाषनगर तहसील अम्बिकापुर जिला सरगुजा छ0ग0 के द्वारा अपने स्वामित्व एवं आधिपत्य की भूमि ग्राम सुभाषनगर स्थित भूमि खसरा नंबर 135 / 8 रकबा 0.243 हे0 भूमि को अनावेदक इति जैन गुप्ता पति डॉ0 रितेश गुप्ता निवासी हरिवेंद्रम कॉलोनी अम्बिकापुर तहसील अम्बिकापुर जिला सगरुजा छ0ग0 के पास अंकन राशि रूपये 30,00,000/- में बिक्री करने का सौदा तय कर बिक्री अनुमति हेतु आवेदन पत्र श्रीमान कलेक्टर महोदय सरगुंजा के समक्ष प्रस्तुत किया गया है, जो जांच एवं प्रतिवेदनार्थ इस न्यायालय को प्राप्त हुआ है।

उक्त संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो सुनवाई दिनांक 16.11.2026 के पूर्व स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि अथवा अभिषाक के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर अपना दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। समय-सीमा के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांकः- 13/10/2026 को मेरे हस्ताक्षर एंव न्यायालीन पदमुद्रा से जारी ।

सील

तहसीलदार
अंबिकापुर
जिला-सरगुजा(छ.ग.)

विश्व चैंपियनशिप में भारत का जलवा,महिला टीम ने जीता गोल्ड



दोहा,10 नवंबर 2026। कतर की राजधानी दोहा में आयोजित आईएसएसएफ विश्व चैंपियनशिप 2026 में भारतीय निशानेबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए देश को दो और पदक दिलाए हैं। मंगलवार को भारतीय महिला टीम ने 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा, जबकि पुरुषों की 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन टीम ने कांस्य पदक हासिल किया। महिला वर्ग में ईशा सिंह, मनु भाकर और दिव्या थाडिगोल सुब्बाराजू की तिकड़ी ने कुल 1761 अंक हासिल कर पहला स्थान प्राप्त किया। वहीं पुरुष वर्ग में ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर, अखिल श्योराण और नीरज कुमार ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया। इस सफलता के साथ विश्व चैंपियनशिप में भारत का पदक अभियान और मजबूत हो गया है।महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल टीम स्पर्धा में भारतीय निशानेबाजों ने शुरुआत से ही बेहतरीन तालमेल और निरंतरता दिखाई। ईशा सिंह, मनु भाकर और दिव्या सुब्बाराजू ने दो दिन तक चले क्वालिफिकेशन राउंड में शानदार निशाने लगाए। तीनों खिलाड़ियों के संयुक्त प्रदर्शन से भारत ने 1761-68× का स्कोर बनाया और स्वर्ण पदक जीतने में सफलता हासिल की। इस स्पर्धा में दक्षिण कोरिया की टीम 1748-66× अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रही और रजत पदक हासिल किया। वहीं वियतनाम की टीम ने 1745-54× अंकों के साथ कांस्य पदक जीता। भारतीय खिलाड़ियों ने दक्षिण कोरिया से 13 अंक अधिक प्राप्त कर स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया।भारतीय टीम की ओर से सबसे बेहतरीन प्रदर्शन ईशा सिंह ने किया। उन्होंने कुल 590-25× अंक हासिल किए। ईशा ने प्रिसिजन राउंड में 292 और रैपिड राउंड में 298 अंक बनाए। उनके इस प्रदर्शन ने भारत को शीर्ष स्थान तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।ईशा ने प्रिसिजन राउंड की तीन सीरीज में क्रमशः 97, 96 और 99 अंक हासिल किए।

स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 : रायपुर समेत छत्तीसगढ़ के 3 शहरों को मिलेगा राष्ट्रीय स्वच्छता पुरस्कार,आज दिल्ली में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु करेंगी सम्मानित

रायपुर,10 नवम्बर 2026। छत्तीसगढ़ के स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में प्रदेश के तीन नगरीय निकायों रायपुर,बिलासपुर और बिल्हा का चयन राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए हुआ है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु आज नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में इन तीनों शहरों को सम्मानित करेंगी। केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय ने राज्य सरकार को पत्र भेजकर चयन की जानकारी दी है। राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले इस सम्मान समारोह में छत्तीसगढ़ की ओर से उप मुख्यमंत्री एवं नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव,विभाग के प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा,सूडा के सीईओ सुमीत अग्रवाल के साथ चयनित नगरीय निकायों के जनप्रतिनिधि,अधिकारी और स्वच्छता कर्मी शामिल होंगे। समारोह सुबह 11:30 बजे से शुरू होगा। केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल और केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू भी कार्यक्रम में मौजूद रहेंगे।



सफाई मित्रों और नागरिकों की भागीदारी पर रहा जोर : स्वच्छ सर्वेक्षण के दसवें संस्करण में शहरों की सफाई व्यवस्था का मूल्यांकन करने के तरीके में बदलाव किया गया है। इस बार नागरिकों की भागीदारी को पहले से ज्यादा महत्व दिया गया है। लोगों के फीडबैक का वेटेज बढ़ाया गया है,ताकि शहरों की स्वच्छता व्यवस्था का आकलन केवल सरकारी दावों या निरीक्षण के आधार पर नहीं, बल्कि आम नागरिकों के अनुभव के आधार पर भी हो सके। नागरिक ऐप,पोर्टल और क्यूआर कोड के जरिए पूरे साल अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं। इससे सफाई व्यवस्था,कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता को लेकर लोगों की राय सर्वेक्षण का हिस्सा बनेगी।

हर शहर से चार प्रतिनिधि ग्रहण करेंगे सम्मान : नई दिल्ली में होने वाले समारोह में प्रत्येक चयनित शहर से चार प्रतिनिधि सम्मान ग्रहण करेंगे। इनमें सफाई मित्रों के साथ स्वच्छता निरीक्षक,पर्यवेक्षक और अभियंता भी शामिल होंगे। इस व्यवस्था के जरिए स्वच्छता अभियान में सीधे तौर पर काम करने वाले कर्मचारियों को भी राष्ट्रीय मंच पर पहचान मिलेगी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने तीनों शहरों के चयन पर नागरिकों, जनप्रतिनिधियों, नगरीय निकायों के अधिकारियों-कर्मचारियों और सफाई मित्रों को बधाई दी है। उन्होंने इस उपलब्धि का श्रेय सफाई मित्रों की मेहनत और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी को दिया।

3 हजार से ज्यादा मूल्यांकनकर्ता करेंगे मैदानी जांच

इस बार सर्वेक्षण के लिए देशभर में 3 हजार से अधिक प्रशिक्षित मूल्यांकनकर्ताओं की तैनाती के जरिए 45 दिनों का मैदानी सर्वेक्षण निर्धारित किया गया है। शहरों में स्वच्छता से जुड़े इंतजामों की जांच और उनके दावों के सत्यापन के लिए जीपीएस आधारित डिजिटल निगरानी व्यवस्था भी अपनाई गई है। इस प्रक्रिया के तहत शहरों की सफाई व्यवस्था और स्वच्छता से जुड़े कामों का जमीनी स्तर पर आकलन किया जाएगा। नागरिकों की प्रतिक्रिया और मैदानी निरीक्षण को महत्व देने से नगरीय निकायों की जवाबदेही बढ़ाने की कोशिश की गई है।

पिछले सर्वेक्षण में भी बिल्हा ने हासिल किया था पहला स्थान

छत्तीसगढ़ के लिए यह उपलब्धि इसलिए भी अहम है,क्योंकि पिछले स्वच्छ सर्वेक्षण में भी बिलासपुर जिले की बिल्हा नगर पंचायत ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई थी। स्वच्छ सर्वेक्षण 2024-25 में 20 हजार से कम आबादी वाले शहरों की श्रेणी में बिल्हा ने देशभर में पहला स्थान हासिल किया था। इस बार रायपुर,बिलासपुर और बिल्हा का राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए चयन प्रदेश में स्वच्छता अभियान और नगरीय निकायों की गतिविधियों को लेकर एक और उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है। सर्वेक्षण की थीम 'स्वच्छता की नई पहल–बढ़ाएं हाथ,करें सफाई साथ'भी इसी सामूहिक जिम्मेदारी और जनभागीदारी पर केंद्रित है।

दीपक टंडन और पत्नी पर रायपुर में एक और एफआईआर

संपत्ति पर कब्जे-सरकारी सील तोड़ने का आरोप,4 दिन पहले पुलिस ने किया था गिरफ्तार

रायपुर,10 नवम्बर 2026। रायपुर के होटल कारोबारी दीपक टंडन और उनकी पत्नी बरखा टंडन के खिलाफ तेलीबांधा थाने में एफआईआर दर्ज की गई है। मामला होटल की संपत्ति पर कब्जा करने, सरकारी सील तोड़ने और जबरन प्रवेश करने से जुड़ा है। आर्ट ऑफ लिविंग की छत्तीसगढ़ प्रमुख सरिता बाजपेयी की शिकायत पर पुलिस ने यह कार्रवाई की है। शिकायत में दंपती पर ताला तोड़ने, अश्लील हरकत करने और जान से मारने की धमकी देने के आरोप लगाए गए हैं। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की 8 धाराओं में केस दर्ज किया है। इससे पहले 6 नवंबर को बिलासपुर की सिरगिट्टी पुलिस ने दीपक टंडन को एआई से तस्वीरों में छेड़छाड़ और कथित ब्लैकमेलिंग के मामले में गिरफ्तार किया था। एफआईआर के मुताबिक, सरिता बाजपेयी ने 2021 में अपनी संपत्ति होटल और बैंक्वेट हॉल चलाने के लिए दीपक टंडन को लीज पर दी थी।



इस संपत्ति में'होटल बेलाकासा श्री' का संचालन किया जा रहा था। लीज की शुरुआती अवधि 2024 में खत्म हो गई थी। इसके बाद आपसी सहमति से इसे दो बार 11-11 महीने के लिए बढ़ाया गया। लीज की अंतिम अवधि 7 अप्रैल 2026 को समाप्त हो गई थी। शिकायत में बताया गया है कि करीब 1 साल से किराया भी नियमित रूप से नहीं दिया जा रहा था। प्रॉपर्टी टैक्स जमा नहीं होने के कारण नगर निगम ने 18 अगस्त 2026 को होटल को सील कर दिया था।

नगर निगम की सील तोड़कर अंदर घुसने का आरोप : सरिता बाजपेयी का आरोप है कि 23 अगस्त को जब वे संपत्ति का कब्जा लेने पहुंचीं, तब बरखा टंडन,दीपक टंडन और उनके कर्मचारी नगर निगम की सील तोड़कर अंदर मौजूद थे। इसकी शिकायत निगम में की गई, जिसके बाद संपत्ति को दोबारा सील कर दिया गया। एफआईआर के अनुसार,30 सितंबर को चाबी सौंपने की बात हुई थी।

इसके बाद 26 अक्टूबर को नगर निगम के जोन-10 के कर्मचारियों ने पुलिस की मौजूदगी में सील खोली और पंचनामा तैयार किया। शिकायतकर्ता का आरोप है कि अगले दिन 27 अक्टूबर को जब वे अपने साथी के साथ होटल पहुंचीं,तो बरखा टंडन,दीपक टंडन और उनके साथियों ने मेन गेट और अंदर के ताले तोड़ दिए। इसके बाद वे संपत्ति में घुस गए। पुलिस ने इस मामले में BNS की धारा 126(2),296,3(5), 324(4),329(4), 331(2), 331(5) और 351(2) के तहत केस दर्ज किया है।

सराफा कारोबारी से 2 करोड़ की लूट...लिफ्ट लेकर गाड़ी में बैठे बदमाशों ने कनपटी पर पिस्टल तानी,गहनों से भरा बैग लेकर भागे

जगदलपुर,10 नवम्बर 2026। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा और बीजापुर जिले की सीमा पर नेशनल हाईवे-63 पर सराफा कारोबारी से लूट हुई है। दो अज्ञात बदमाशों ने 2 करोड़ रुपए से ज्यादा के सोने-चांदी के आभूषण लूट लिए। व्यापारी बीजापुर जिले के भैरमगढ़ में अपनी दुकान बंद करने के बाद एक व्यापारी के साथ बुकिंग पर ली गई गाड़ी से गीदम स्थित अपने घर लौट रहा था। इसी दौरान जंगल में 2 बदमाशों ने लिफ्ट मांगने के बहाने गाड़ी रुकवाई और उसमें बैठ गए। इसके बाद दोनों ने व्यापारी और ड्राइवर की कनपटी पर पिस्टल तान दी।

चाकू की नोक पर धमकाकर आभूषणों से भरा बैग लूटकर फरार हो गए। बैग में करीब 1300 ग्राम सोने के आभूषण थे। इनकी कीमत 1 करोड़ 80 लाख रुपए से ज्यादा बताई जा रही है। इसके अलावा बैग में 15 किलो से ज्यादा चांदी के आभूषण भी थे, जिनकी कीमत करीब 25 से 28 लाख रुपए बताई गई है। हालांकि, इस मामले में अभी तक स्नढ्ढक्र दर्ज नहीं हुई है। पुलिस की जांच और आभूषणों के सत्यापन के बाद ही लूट की वास्तविक कीमत स्पष्ट हो सकेगी। मामला नेलसनार थाना क्षेत्र का है।



हाथ दिखाकर रुकवाई गाड़ी,फिर तान दी पिस्टल

जानकारी के मुताबिक,व्यापारी स्वरुप सोनी शाम के समय भैरमगढ़ से गीदम के लिए रवाना हुआ था। उसके साथ एक व्यापारी भी था। दोनों निजी गाड़ी बुक कर अपने घर की ओर जा रहे थे। इसी दौरान नेलसनार थाना क्षेत्र में बीच जंगल में अज्ञात लोगों ने सड़क पर हाथ दिखाकर गाड़ी रुकवाई। इसके बाद 2 लोग गाड़ी में सवार हो गए और कुछ दूर आगे ले जाने के बाद व्यापारी और ड्राइवर को हथियारों के दम पर धमकाया। बदमाशों ने दोनों की कनपटी पर पिस्टल तान दी और चाकू भी अड़ा दिया। इसके बाद सोने-चांदी से भरा बैग लेकर फरार हो गए।

कुछ दूरी पर फेंके मोबाइल,पुलिस जांच में जुटी : वारदात के बाद बदमाश कुछ दूरी पर व्यापारी और ड्राइवर के मोबाइल फोन फेंककर फरार हो गए। वारदात के बाद किसी तरह व्यापारी पुलिस थाने पहुंचे और इसकी जानकारी पुलिस को दी गई। पुलिस की टीम मामले की जांच में जुट गई है। बदमाश कौन थे और उन्होंने वारदात को किस तरह अंजाम दिया,इसकी जानकारी जुटाई जा रही है। पुलिस आसपास के रास्तों और वारदात स्थल से जुड़े सुराग खंगाल रही है। नेलसनार थाना प्रभारी विवेकानंद पटेल का कहना है कि लूट कितने ग्राम सोने-चांदी के आभूषणों की हुई है ये अभी स्पष्ट नहीं है। व्यापारी हिसाब कर के आएंगे बोले हैं। उन्होंने कहा कि, हम मामले की जांच कर रहे हैं।

दो दिन पहले जगदलपुर में भी हुई थी 1.74 करोड़ की चोरी

बता दें कि धनतेरस की रात जगदलपुर के संजय मार्केट स्थित एक सराफा दुकान में भी चोरी हुई थी। ग्राहक बनकर पहुंची महिलाओं और बच्चों ने करीब 1200 ग्राम सोने-चांदी के आभूषण पार कर दिए थे। चोरी किए गए आभूषणों की कीमत करीब 1 करोड़ 74 लाख रुपए बताई गई थी। हालांकि,इस सबंध में पुलिस जल्द ही खुलासा कर सकती है।

बोर्ड परीक्षा ड्यूटी के लिए सेंटर-हेड को मिलेंगे 200 रुपए

रायपुर,10 नवम्बर 2026। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल ने 2026-27 की बोर्ड परीक्षाओं के संचालन के लिए सेंटर हेड,असिस्टेंट सेंटर हेड और अन्य स्टाफ की पेमेंट रेट तय की हैं। अब 500 से ज्यादा स्टूडेंट्स वाले एग्जाम सेंटर के सेंटर हेड को 200 रुपए प्रतिदिन मिलेंगे। वहीं,



500 तक स्टूडेंट्स वाले सेंटर हेड को 180 रुपए प्रतिदिन दिए जाएंगे। मंडल ने एग्जाम सेंटर में स्टूडेंट्स की संख्या के आधार पर स्टाफ की नियुक्ति के नियम भी तय किए हैं। यह व्यवस्था हाईस्कूल, हायर सेकंडरी, शारीरिक शिक्षा पत्रोपाधि और डीएलएड की मेन-सेकंड मेन एग्जाम के लिए लागू होगी। फाइनेंस कमेटी की 6 अक्टूबर और एग्जीक्यूटिव कमेटी की 15 अक्टूबर 2026 की मीटिंग में पेमेंट बढ़ाने का फैसला लिया गया था। नई रेट एग्जाम ईयर 2026-27 से लागू होंगी। मंडल के आदेश के मुताबिक,500 तक स्टूडेंट्स वाले सेंटर में एक और 500 से ज्यादा स्टूडेंट्स वाले सेंटर में दो असिस्टेंट सेंटर हेड नियुक्त किए जाएंगे। इन्हें 150 रुपए प्रतिदिन पेमेंट मिलेगा। एग्जाम रूम में 30 स्टूडेंट्स तक दो सुपरवाइजर नियुक्त किए जाएंगे। इसके बाद हर 15 अतिरिक्त स्टूडेंट्स पर एक सुपरवाइजर बढ़ाया जाएगा। प्रत्येक सुपरवाइजर को 75 रुपए प्रतिदिन मिलेंगे।

रायपुर में बनेगी रियासत गैलरी 14 राजघरानों का इतिहास दिखेगा



रायपुर,10 नवम्बर 2026। छत्तीसगढ़ के 14 पूर्व राजघरानों का इतिहास अब एक ही जगह देखने को मिलेगा। राज्य सरकार इन रियासतों की शाही परंपराओं,राजपरिवारों की वंशावलियों और दुर्लभ धरोहरों को सहेजने के लिए रायपुर के संस्कृति विभाग में 'रियासत वीथिका' बनाने जा रही है। इसमें छत्तीसगढ़ के राजघरानों के इतिहास को दो फ्लोर में प्रदर्शित किया जाएगा। गैलरी में राजाओं की जीवनशैली से लेकर दरबार की परंपराएं,शाही प्रतीक, पारंपरिक पोशाकें,प्राचीन हथियार, ऐतिहासिक सिक्के और पुराने दस्तावेज देखने को मिलेंगे। पर्यटन और संस्कृति विभाग ने इस परियोजना का खाका तैयार कर लिया है। पूर्व राजपरिवारों के वंशजों और प्रतिनिधियों के साथ हुई परामर्श बैठक में इसका प्रेजेंटेशन दिया गया। विभाग ने राजपरिवारों से ऐतिहासिक सामग्री जुटाने,वंशावली की जानकारी देने और पारिवारिक इतिहास दर्ज कराने में सहयोग मांगा है। अभी छत्तीसगढ़ की रियासतों से जुड़ी कई ऐतिहासिक वस्तुएं निजी महलों,राजपरिवारों के पारिवारिक अभिलेखागार और क्षेत्रीय संग्रहालयों में रखी हुई हैं। इनके बारे में आम लोगों को बहुत कम जानकारी है। रियासत वीथिका के जरिए इन सभी धरोहरों को एक साझा मंच पर लाने की योजना है। इससे पर्यटकों के साथ इतिहास में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को भी एक जगह डिटेल में जानकारी मिल सकेगी। पर्यटन एवं संस्कृति सचिव डॉ. एस. भारतीदासन ने बताया कि गैलरी में राजदरबार की व्यवस्था, शाही मुहरों, सिक्कों, हथियारों, पोशाकों और सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं का दस्तावेजीकरण किया जाएगा।

बिना बिजली और डीजल के खेतों तक पहुंचेगा सिंचाई का पानी,सीएम साय ने पोंगरो एनीकट हाइड्रो पावर पम्पिंग योजना का किया निरीक्षण

आधुनिक विज्ञान और स्थानीय संसाधनों के समन्वय से किसानों की समृद्धि का नया रास्ता : मुख्यमंत्री साय

रायपुर,10 नवम्बर 2026। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने जशपुर जिले के कांसाबेल विकासखंड अंतर्गत ग्राम पोंगरो में घुघरी नदी पर निर्मित एनीकट हाइड्रो पावर आधारित पम्पिंग योजना का स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने योजना की कार्यप्रणाली, सिंचाई क्षमता और किसानों को मिलने वाले लाभों की जानकारी ली। सरगुजा संभाग की अपनी तरह की इस पहली नवाचारी सिंचाई परियोजना की विशेषता यह है कि इसमें बिजली, डीजल, पेट्रोल अथवा सौर ऊर्जा का उपयोग किए बिना केवल नदी के जल प्रवाह से खेतों तक सिंचाई का पानी पहुंचाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि खेती की समृद्धि के लिए सिंचाई सुविधाओं का विस्तार हमारी सरकार की प्राथमिकता है। पोंगरो की यह परियोजना इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि आधुनिक विज्ञान और स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर उपयोग से किसानों की समस्याओं का स्थायी और पर्यावरण अनुकूल समाधान किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस



तकनीक से किसानों को सिंचाई के लिए बिजली और डीजल पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा, जिससे खेती की लागत कम करने में भी मदद मिलेगी। यह अभिनव पहल प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में भी सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए एक प्रेरक मॉडल बन सकती है।

135 किसान परिवारों को मिलेगा सीधा लाभ : लगभग 2 करोड़ 68 लाख रुपए की लागत से पूर्ण की गई इस परियोजना से क्षेत्र के करीब 135 कृषक परिवारों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। योजना के माध्यम से लगभग 80 एकड़ कृषि क्षेत्र में रबी एवं ग्रीष्मकालीन फसलों के लिए सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। इससे किसानों को वर्षा आधारित खेती पर निर्भरता कम करने, अतिरिक्त फसल लेने और कृषि उत्पादन बढ़ाने के अवसर मिलेंगे। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ में जल संसाधनों का बेहतर उपयोग करते हुए किसानों को वर्षभर खेती के अवसर उपलब्ध कराना हमारा संकल्प है।

पोंगरो की यह पहल दर्शाती है कि नवाचार को गांवों और खेतों तक पहुंचाकर कृषि विकास को नई गति दी जा सकती है। हमारी सरकार किसानों की आय बढ़ाने, सिंचाई का दायरा विस्तृत करने और खेती को अधिक लाभकारी बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इस अवसर पर श्रीमती कौशल्या साय, जिला पंचायत अध्यक्ष सालिक साय, कलेक्टर रोहित व्यास, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेद सिंह, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अभिषेक कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

नदी का जल प्रवाह ही बनेगा सिंचाई की ऊर्जा

पोंगरो एनीकट हाइड्रो पावर पम्पिंग योजना में नदी के बहते पानी की ऊर्जा से टरबाइन पम्प संचालित किया जाता है। इसके लिए पूर्व निर्मित एनीकट से लगभग 100 मीटर डाउनस्ट्रीम में प्लेटफॉर्म तैयार कर टरबाइन पम्प स्थापित किया गया है। यह पम्प नदी तल से लगभग 12 मीटर ऊंचाई पर स्थित तथा 200 मीटर दूर निर्मित वितरण टंकी तक अधिकतम 17 लीटर प्रति सेकंड की दर से पानी पहुंचाने में सक्षम है। वितरण टंकी से पक्की सिंचाई नहरों एवं नालियों के माध्यम से खेतों तक पानी पहुंचाने की व्यवस्था की गई है। इस परियोजना की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि पम्प संचालन के लिए किसी बाहरी ऊर्जा स्रोत की आवश्यकता नहीं है। इससे सिंचाई व्यवस्था के संचालन में पारंपरिक ईंधन की खपत और उससे होने वाले कार्बन उत्सर्जन से बचा जा सकेगा। यह परियोजना हरित ऊर्जा, जल संरक्षण और टिकाऊ कृषि की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

भूपेश बोले-मोदी-शाह के दौरों से बस्तर को क्या मिला...राहुल की बहस चुनौती स्वीकारें,पंचायतों को 1 करोड़ देने का वादा याद दिलाया

दुर्ग-भिलाई,10 नवम्बर 2026। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बस्तर दौरे और नक्सलवाद पर दिए बयान को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पलटवार किया है। दुर्ग के जंजगिरी गांव में उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री और गृहमंत्री अमित शाह बार-बार बस्तर आ रहे हैं, लेकिन यहां के लोगों को मिला क्या। भूपेश बघेल ने दावा किया कि उनके शासनकाल में नक्सलवाद कमजोर हुआ था। उन्होंने भाजपा सरकार से पूछा कि नक्सल मुक्त होने वाली पंचायतों को 1 करोड़ रुपए देने का वादा कहां गया। पीएम के 'दिमागी नक्सली' वाले बयान पर उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी और अमित शाह का मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री से राहुल गांधी की बहस की चुनौती स्वीकार करने को भी कहा। भूपेश बघेल ने कहा कि जब प्रधानमंत्री ने आरोप लगाए हैं और राहुल गांधी ने बहस की चुनौती दी है,तो उन्हें सामने आकर चर्चा करनी चाहिए।

भूपेश बोले- रमन सिंह के शासनकाल में चरम पर था नक्सलवाद : भूपेश बघेल ने



कहा कि नक्सलवाद अपने चरम पर पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के शासनकाल में था। कांग्रेस सरकार के दौरान इसमें कमी आई। अब प्रधानमंत्री और गृह मंत्री लगातार बस्तर का दौरा कर रहे हैं, लेकिन वहां के विकास और लोगों को मिल रहे लाभ पर कोई जवाब नहीं दे रहे हैं।

बस्तर की संपत्ति अडाणी को सौंपने का लगाया आरोप : पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि गृह मंत्री अमित शाह ने घोषणा की थी कि नक्सल मुक्त होने वाली हर पंचायत को 1 करोड़ रुपए दिए जाएंगे। सरकार बताए कि यह राशि कहां है और कितनी पंचायतों को इसका लाभ मिला है। नक्सलवाद के नाम पर माहौल बनाया जा रहा है, ताकि बस्तर की पूरी संपत्ति अडाणी को सौंपी जा सके। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बस्तर में कहा था कि जंगलों से हथियारबंद नक्सली खत्म हो रहे हैं, लेकिन दिमागी नक्सली अब भी संस्थाओं और राजनीतिक दलों में मौजूद हैं। इस बयान पर भूपेश बघेल ने कहा कि मोदी, अमित शाह और भाजपा के नेताओं का मानसिक संतुलन बिगड़ रहा है। इसमें मंत्री और मुख्यमंत्री भी शामिल हैं।

भाजपा नेताओं के नारों और बयानों पर निशाना : भूपेश बघेल ने भाजपा नेताओं के बयानों और नारों पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि राजनांदगांव में लोकतंत्र हटाने का नारा लगाया जा रहा है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री कहते हैं कि कांग्रेस को छोड़कर सबकी दुकान बंद हो जाएगी। बघेल ने कहा कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव जेपी नड्डा मुर्दाबाद के नारे लगा रहे हैं। बिहार के मुख्यमंत्री को क्राइम और अपराध का अंतर समझ नहीं आता। वे कहते हैं कि क्राइम हो सकता है, अपराध नहीं।

स्मृति ईरानी आज आएंगी छत्तीसगढ़ दौरे पर,भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन के कार्यक्रम की तैयारियों का लेंगी जायजा

रायपुर,10 नवम्बर 2026। भाजपा की राष्ट्रीय महामंत्री और छत्तीसगढ़ प्रदेश प्रभारी स्मृति ईरानी आज छत्तीसगढ़ दौरे पर आएंगी। वे सुबह 9 बजे दिल्ली से रायपुर पहुंचेंगी। एयरपोर्ट से ही सीधे रायगढ़ के लिए रवाना होंगी। यहां वे 15 नवंबर को धरमजयगढ़ में आयोजित होने वाले जनजातीय गौरव दिवस के कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा करेंगी। इस दौरान वे प्रदेश भाजपा के पदाधिकारियों और नेताओं के साथ बैठक भी करेंगी। बैठक के बाद स्मृति ईरानी रायपुर होते हुए वापस दिल्ली लौट जाएंगी। दरअसल, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन 15 नवंबर को छत्तीसगढ़ दौरे पर आएंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभालने के बाद यह उनका पहला छत्तीसगढ़ दौरा होगा। इस दौरान वे रायगढ़ जिले के धरमजयगढ़ में आयोजित जनजातीय गौरव दिवस के कार्यक्रम में शामिल होंगे। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के आमंत्रण पर नितिन नबीन छत्तीसगढ़ पहुंचेंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष के दौरे को लेकर प्रदेश भाजपा संगठन ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। उनके आगमन को राजनीतिक और संगठनात्मक लिहाज से काफी अहम माना जा रहा है। इसी सिलसिले में प्रदेश प्रभारी स्मृति ईरानी आज छत्तीसगढ़ पहुंचकर कार्यक्रम की तैयारियों का जायजा लेंगी।



प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)